

लैव्यव्यवस्था

होमबलि के नियम

1 यहोवा परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मिलापवाले तम्बू में से उससे बोला। यहोवा ने कहा, 2 "इज़्राएल के लोगों से कहो: तुम लोगों में से कोई जब यहोवा को भेंट लाए तो वह भेंट तुम्हें उन जानवरों में से लानी चाहिए जो तुम्हारे झुण्ड या रेवड़ में से हो।

3 "यदि कोई व्यक्ति अपने पशुओं में से किसी की होमबलि दे तो वह नर होना चाहिए और उस जानवर में कोई दोष नहीं होना चाहिए। उस व्यक्ति को चाहिए कि वह जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाये। तब यहोवा भेंट स्वीकार करेगा। 4 इस व्यक्ति को अपना हाथ जानवर के सिर पर रखना चाहिए। परमेश्वर होमबलि को व्यक्ति के पाप के लिए भुगतान के रूप में स्वीकार करेगा।

5 "व्यक्ति को चाहिए कि वह बछड़े को यहोवा के सामने मारे। हारून के याजक पुत्रों को बछड़े का खून लाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार की वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 6 वह उस जानवर का चमड़ा हटा देगा और उसे टुकड़ों में काटेगा। 7 हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर लकड़ी और आग रखनी चाहिए। 8 हारून के याजक पुत्रों को वे टुकड़े, (सिर और चर्बी) लकड़ी पर रखनी चाहिए। वह लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर होती है। 9 याजक को जानवर के भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को जानवर के सभी भागों को वेदी पर जलाना चाहिए। यही होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

10 "यदि कोई व्यक्ति भेड़ या बकरी की होमबलि चढ़ाए तो वह एक ऐसे नर पशु की भेंट दे जिसमें कोई दोष न हो। 11 उस व्यक्ति को वेदी के उत्तर की ओर यहोवा के सामने पशु को मारना चाहिए। हारून के याजक पुत्रों को वेदी के चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 12 तब याजक को चाहिए कि वह पशु को टुकड़ों में काटे। पशु का सिर और चर्बी याजक को लकड़ी के ऊपर क्रम से रखना चाहिए। लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर रहती है। 13 याजक को पशु के भीतरी भागों और उसके पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को चाहिए कि वह पशु के सभी भागों को

वेदी पर जलाएँ। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

14 "यदि कोई व्यक्ति यहोवा को पक्षी की होमबलि चढ़ाए तो यह पक्षी फ़ाख़ता या नया कबूतर होना चाहिए। 15 याजक भेंट को वेदी पर लाएगा। याजक पक्षी के सिर को अलग करेगा। तब याजक पक्षी को वेदी पर जलाएगा। पक्षी का खून वेदी की ओर बहना चाहिए। 16 याजक को पक्षी के गले की थैली और उसके पंखों को वेदी के पूर्व की ओर फेंक देना चाहिए। यह वही जगह है जहाँ वे वेदी से निकालकर राख डालते हैं।

17 तब याजक को पंख के पास से पक्षी को चीरना चाहिए, किन्तु पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटना चाहिए। याजक को वेदी के ऊपर आग पर रखी लकड़ी के ऊपर पक्षी को जलाना चाहिए। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

अन्नबलि के नियम

2 "जब कोई व्यक्ति यहोवा को अन्नबलि चढ़ाये तो उसकी भेंट महीन आटे की होनी चाहिए। वह व्यक्ति उस आटे पर तेल डाले और उस पर लोबान रखे। 2 तब वह इसे हारून के याजक पुत्रों के पास लाए। वह व्यक्ति तेल और लोबान से मिला हुआ एक मुट्ठी महीन आटा ले तब याजक वेदी पर स्मृतिभेंट के रूप में आटे को आग में जलाए। यह यहोवा के लिए सुगन्ध होगी 3 और बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों के लिए होगी। यह भेंट यहोवा को आग से दी जाने वाली भेंटों में सबसे अधिक पवित्र होगी।

चूल्हे में पकी अन्नबलि के नियम

4 "जब तुम चूल्हे में पकी अन्नबलि लाओ तो यह अखमीरी मैदे के फुलके या ऊपर से तेल डाली हुई अखमीरी चपातियों होनी चाहिए। 5 यदि तुम भूनने की कड़ाही से अन्नबलि लाते हो तो यह तेल मिली अखमीरी महीन आटे की होनी चाहिए। 6 तुम्हें इसे कई टुकड़े करके कई भागों में बाँटना चाहिए और इन पर तेल डालना चाहिए। यह अन्नबलि है। 7 यदि तुम अन्नबलि तलने की कड़ाही से लाते हो तो यह तेल मिले महीन आटे की होनी चाहिए।

8“तुम इन चीजों से बनी अन्नबलि यहोवा के लिए लाओगे। तुम उन चीजों को याजक के पास ले जाओगे और वह उन्हें वेदी पर रखेगा। 9 फिर उस अन्नबलि में से याजक इसका कुछ भाग लेकर उसे स्मृति भेंट के रूप में वेदी पर जलायेगा। यह आग द्वारा दी गई एक भेंट है। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होता है। 10 बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों की होगी। यह भेंट यहोवा को आग से चढ़ाई जाने वाली भेंटों में अति पवित्र होगी।

11 “तुम्हें यहोवा को खमीर वाली कोई अन्नबलि नहीं चढ़ानी चाहिए। तुम्हें यहोवा को, आग द्वारा भेंट के रूप में खमीर या शहद नहीं जलाना चाहिए। 12 तुम पहली फ़सल से तैयार की गई खमीर या शहद यहोवा को भेंट के रूप में ला सकते हो, किन्तु खमीर और शहद मधुर गन्ध के रूप में ऊपर जाने के लिए वेदी पर जलाने नहीं चाहिए। 13 तुम्हें अपनी लाठी हुई हर एक अन्नबलि पर नमक भी रखना चाहिए। यहोवा से तुम्हारे वाचा के प्रतीक रूप, नमक का अभाव तुम्हारी किसी अन्नबलि में नहीं होना चाहिए। तुम्हें अपनी सभी भेंटों के साथ नमक लाना चाहिए।

पहली फ़सल से अन्नबलि के नियम

14 “यदि तुम पहली फ़सल से यहोवा को अन्नबलि लाते हो तो तुम्हें भुनी हुई अन्न की बालें लानी चाहिए। इस अन्न को दलकर छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाना चाहिए। इस पहली फ़सल से तुम्हारी अन्नबलि होगी। 15 तुम्हें इस पर तेल डालना और लोबान रखना चाहिए। यह अन्नबलि है। 16 याजक को चाहिए कि वह स्मृति भेंट के रूप में दले गए अन्न के कुछ भाग, तेल और इस पर रखे पूरे लोबान को जलाए। यह यहोवा को आग से चढ़ाई भेंट है।

मेलबलि के नियम

3 “यदि यह भेंट मेलबलि है और यह यहोवा को अपने पशुओं के झुण्ड से एक नर या मादा पशु देता है, तो इस पशु में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 2 इस व्यक्ति को अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस व्यक्ति द्वारा उस पशु को मार डालना चाहिए। तब हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 3 इस व्यक्ति को मेलबलि में से यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ानी चाहिए। भीतरी भागों को ढकने वाली और भीतरी भागों में रहने वाली चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। 4 उस के दोनों गुर्दों पर की चर्बी और पुट्टे*

पुट्टे पशु की पसली के पिछली से लेकर उसकी पिछली टाँगों तक का भाग।

की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। गुर्दों के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी निकाल लेनी चाहिए। 5 तब हारून के पुत्र चर्बी को वेदी पर जलाएंगे। वे आग पर रखी हुई लकड़ी, जिस पर होमबलि रखी गई, उसके ऊपर उसे रखेंगे। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है।

6 “यदि व्यक्ति यहोवा के लिए अपनी रेवड़ में से मेलबलि के रूप में पशु को लाता है तब उसे एक नर या मादा पशु भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। 7 यदि वह भेंट में एक मेमना लाता है तो उसे यहोवा के सामने लाना चाहिए। 8 उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। हारून के पुत्र वेदी पर चारों ओर पशु का खून डालेंगे। 9 तब वह व्यक्ति मेलबलि का एक भाग यहोवा को आग द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाएगा। इस व्यक्ति को चर्बी और चर्बी से भरी सम्पूर्ण पूँछ और पशु के भीतरी भागों के ऊपर और चारों ओर की चर्बी लानी चाहिए। (उसे उस पूँछ को रीढ़ की हड्डी के एकदम पास से काटना चाहिए।)

10 इस व्यक्ति को दोनों गुर्दों और इन्हें ढकने वाली चर्बी और पुट्टे की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे गुर्दों के साथ कलेजे को भी निकाल लेना चाहिए। 11 तब याजक वेदी पर इस को जलाएगा। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट होगी तथा यह लोगों के लिए भी भोजन होगी।

मेलबलि के रूप में बकरे की बलि के नियम

12 “यदि किसी व्यक्ति की भेंट एक बकरा है तो वह उसे यहोवा के सामने भेंट करे। 13 इस व्यक्ति को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। तब हारून के पुत्र बकरे का खून वेदी पर चारों ओर डालेंगे। 14 तब व्यक्ति को बकरे का एक भाग यहोवा को अग्नि द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाने के लिए लाना चाहिए। इस व्यक्ति को भीतरी भाग के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। 15 उसे दोनों गुर्दों, उसे ढकने वाली चर्बी तथा पशु के पुट्टे की चर्बी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे के साथ गुर्दों को निकाल लेना चाहिए। 16 याजक को वेदी पर बकरे के भागों को जलाना चाहिए। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट तथा याजक का भोजन होगा। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है। (लेकिन झरा उत्तम भाग यहोवा का है।) 17 यह नियम तुम्हारी सभी पीढ़ियों में सदा चलता रहेगा। तुम जहाँ कहीं भी रहो, तुम्हें खून या चर्बी नहीं खानी चाहिए।”

संयोगवश हुए पापों के लिए पापबलि के नियम

4 यहोवा ने मूसा से कहा, 1^५इम्राएल के लोगों से कहो: यदि किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है तो उस व्यक्ति को निम्न बातों करनी चाहिए:

3^५यदि अभिषिक्त याजक से कोई ऐसा पाप हुआ हो जिसका बुरा असर लोगों पर पड़ा हो तो उसे अपने किए गए पाप के लिये यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए : उसे एक बछड़ा यहोवा को भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे यहोवा को बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए। 4अभिषिक्त याजक को उस बछड़े को परमेश्वर के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए। उसे अपना हाथ उस बछड़े के सिर पर रखना चाहिए और यहोवा के सामने उसे मार देना चाहिए। 5तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून लेना चाहिए और मिलापवाले तम्बू में ले जाना चाहिए। 6याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डालनी चाहिए और महापवित्र स्थान के पर्दे के सामने खून को सात बार परमेश्वर के सामने छिड़कना चाहिए। 7याजक को कुछ खून सुगन्धित धूप की वेदी के सिरे पर लगाना चाहिए। यह वेदी यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू में है। याजक को बछड़े का सारा खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।) 8और उसे पापबलि किए गए बछड़े की सारी चर्बी को निकाल लेना चाहिए। उसे भीतरी भागों के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी को निकाल लेनी चाहिए। 9उसे दोनों गुर्दे, उसके ऊपर की चर्बी और पुट्टे पर की चर्बी भी लेनी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लेनी चाहिये और उसे कलेजे को गुर्दे के साथ निकाल लेना चाहिए। 10याजक को ये चीज़ें ठीक उसी तरह लेनी चाहिए जिस प्रकार उसने ये चीज़ें मेलबलि के बछड़े से ली थी। * याजक को होमबलि की वेदी पर पशु के भागों को जलाना चाहिए। 11-12किन्तु याजक को बछड़े का चमड़ा, सिर सहित इसका सारा माँस, पैर, भीतरी भाग और शरीर का बेकार भाग निकाल लेना चाहिए। याजक को डेरे के बाहर विशेष स्थान पर बछड़े के पूरे शरीर को ले जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है। याजक को वहाँ लकड़ी की आग पर बछड़े को जलाना चाहिए। बछड़े को वहाँ जलाया जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है।

13^५ऐसा हो सकता है कि पूरे इम्राएल राष्ट्र से अनजाने में कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे न करने का आदेश परमेश्वर ने दिया है। यदि ऐसा होता है तो वे दोषी होंगे। 14यदि उन्हें इस पाप का पता चलता है तो पूरे राष्ट्र के लिए एक बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाया जाना चाहिए।

उन्हें बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सामने लाना चाहिए। 15बुजुर्गों को यहोवा के सामने बछड़े के सिर पर अपने हाथ रखने चाहिए। यहोवा के सामने बछड़े को मारना चाहिए। 16तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून मिलापवाले तम्बू में लाना चाहिए। 17याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डुबानी चाहिए और पर्दे के सामने सात बार खून को यहोवा के सामने छिड़कना चाहिए। 18तब याजक को कुछ खून वेदी के सिरे के सींगों पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने है।) याजक को सारा खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।

19^५तब याजक को पशु की सारी चर्बी निकाल लेनी चाहिए और उसे वेदी पर जलाना चाहिए। 20वह बछड़े के साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने पापबलि के रूप में चढ़ाये गये बछड़े के साथ किया था। इस प्रकार याजक लोगों के पाप का भुगतान करता है, इससे यहोवा इम्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। 21याजक डेरे के बाहर बछड़े को ले जाएगा और उसे वहाँ जलाएगा। यह पहले के समान होगा। यह पूरे समाज के लिये पापबलि होगी।

22^५हो सकता है किसी शासक से संयोगवश, कोई ऐसी बात हो जाए जिसे उसके परमेश्वर यहोवा ने न करने का आदेश दिया है, तो यह शासक दोषी होगा। 23यदि उसे इस पाप का पता चलता है तब उसे एक ऐसा बकरा लाना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। यही उसकी भेंट होगी। 24शासक को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि को यहोवा के सामने मारते हैं। बकरा पापबलि है। 25याजक को पापबलि का कुछ खून अपनी उँगली पर लेना चाहिए। याजक होमबलि की वेदी के सिरे पर खून छिड़केगा। याजक को बाकी खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए 26और याजक को बकरे की सारी चर्बी वेदी पर जलानी चाहिए। इसे उसी प्रकार जलाना चाहिए जिस प्रकार वह मेलबलि की चर्बी को जलाता है। इस प्रकार याजक शासक के पाप का भुगतान करता है और यहोवा शासक को क्षमा करेगा।

27^५हो सकता है कि साधारण जनता में से किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसी बात हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है। 28यदि उस व्यक्ति को अपने पाप का पता चले तो वह एक बकरी लाए जिसमें कोई दोष न हो। यह उस व्यक्ति की भेंट होगी। वह इस बकरी को उस पाप के लिए लाए जो उसने किया है। 29उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और होमबलि के स्थान पर उसे मारना चाहिए। 30तब याजक को उस बकरी का कुछ खून

अपनी उँगली पर लेना चाहिए और होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। याजक को वेदी की नींव पर बकरी का सारा खून उँडेलना चाहिए। 31 तब याजक को बकरी की सारी चर्बी उसी प्रकार निकालनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि से चर्बी निकाली जाती है। याजक को इसे यहोवा के लिये सुगन्धित धूप की वेदी पर जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान कर देगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

32 "यदि यह व्यक्ति पापबलि के रूप में एक मेमने को लाता है तो उसे एक मादा मेमना लानी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। 33 व्यक्ति को उसके सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर पापबलि के रूप में मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि के पशु को मारते हैं। 34 याजक को अपनी उँगली पर पापबलि का खून लेना चाहिए और इसे होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। तब उसे मेमने के सारे खून को वेदी की नींव पर उँडेलना चाहिए। 35 याजक को मेमने की सारी चर्बी उसी प्रकार लेनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि के मेमने की चर्बी ली जाती है। याजक को यहोवा के लिए आग द्वारा दी जाने वाली भेंटों के समान ही वेदी पर इन टुकड़ों को जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

असावधानी में किए गए विभिन्न अपराध

5 "यदि कोई व्यक्ति न्यायालय में गवाही देने के लिए बुलाया जाता है और जो कुछ उसने देखा है या सुना है, उसे नहीं बताता तो वह पाप करता है। उसे उसके अपराध के लिए अवश्य ही दण्ड भोगना होगा। 2 अथवा कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ को छूता है जो अशुद्ध है जैसे अशुद्ध जंगली जानवर का शव या अशुद्ध मवेशी का शव अथवा रेंगने वाले किसी अशुद्ध जन्तु का शव और उस व्यक्ति को इसका पता भी नहीं चलता कि उसने उन चीज़ों को छुआ है, तो भी वह बुरा करने का दोषी होगा। 3 किसी भी व्यक्ति से बहुत सी ऐसी चीज़ें निकलती हैं जो शुद्ध नहीं होतीं। कोई व्यक्ति इनमें से दूसरे व्यक्ति की किसी भी अशुद्ध वस्तु को अनजाने में ही छू लेता है तब वह दोषी होगा। 4 अथवा ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा करने का जल्दी में वचन दे देता है। लोग बहुत प्रकार के वचन जल्दी में दे देते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसा वचन दे देता है और उसे भूल जाता है तो वह अपराधी है और जब उसे अपना वचन याद आता है तब भी वह अपराधी है। 5 अतः, यदि वह इनमें से किसी का दोषी है तो उसे अपनी बुराई स्वीकार करनी चाहिए। 6 उसे परमेश्वर को अपने किए हुए पाप के लिए दोषबलि

लानी चाहिए। उसे दोषबलि के रूप में अपनी रेवड़ से एक मादा जानवर लाना चाहिए। यह मेमना या बकरी हो सकता है। तब याजक वह कार्य करेगा जिससे उस व्यक्ति के पाप का भुगतान होगा।

7 "यदि कोई व्यक्ति मेमना भेंट करने में असमर्थ है तो उसे दो फ़ाख़्ता या कबूतर के दो बच्चे यहोवा को भेंट में देना चाहिए। यह उसके पाप के लिए दोषबलि होगी। एक पक्षी दोषबलि के लिए होना चाहिए तथा दूसरा होमबलि के लिए होना चाहिए। 8 उस व्यक्ति को चाहिए कि वह उन पक्षियों को याजक के पास लाए। पहले याजक को दोषबलि के रूप में एक पक्षी को चढ़ाना चाहिए। याजक पक्षी की गर्दन को मोड़ देगा। किन्तु याजक पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटेगा। 9 तब याजक को दोषबलि के खून को वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। तब याजक को बचा हुआ खून वेदी की नींव पर डालना चाहिए। यह दोषबलि है। 10 तब याजक को नियम के अनुसार होमबलि के रूप में दूसरे पक्षी की भेंट चढ़ानी चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के अपराधों का भुगतान देगा। और परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा करेगा।

11 "यदि कोई व्यक्ति दो फ़ाख़्ता या दो कबूतर भेंट चढ़ाने में असमर्थ हो तो उसे एपा का दसवाँ भाग* महीन आटा लाना चाहिए। यह उसकी दोषबलि होगी। उस व्यक्ति को आटे पर तेल नहीं डालना चाहिए। उसे इस पर लोबान नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह दोषबलि है। 12 व्यक्ति को आटा याजक के पास लाना चाहिए। याजक इसमें से मुट्ठी भर आटा निकालेगा। यह स्मृति भेंट होगी। याजक यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट पर वेदी के ऊपर आटे को जलाएगा। यह दोषबलि है। 13 इस प्रकार याजक व्यक्ति के अपराधों के लिए भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। बची हुई दोषबलि याजक की वैसे ही होगी जैसे अन्नबलि होती है।"

14 यहोवा ने मूसा से कहा, 15 "कोई व्यक्ति यहोवा की पवित्र वस्तुओं* के प्रति अकस्मात् कोई गलती कर सकता है। तो उस व्यक्ति को एक दोष रहित मेड़ा लाना चाहिए। यह मेड़ा यहोवा के लिए उसकी दोषबलि होगी। तुम्हें उस मेड़े का मूल्य निर्धारित करने के लिए अधिकृत मानक का प्रयोग करना चाहिए। 16 उस व्यक्ति को पवित्र चीज़ों के विपरीत किये गये पाप के लिए भुगतान अवश्य करना चाहिए। जिन चीज़ों का उसने वायदा किया है, वे अवश्य देनी चाहिए। उसे मूल्य में पाँचवाँ भाग जोड़ना चाहिए। उसे यह धन याजक को देना

एपा का दसवाँ भाग अर्थात् लगभग बराबर दो लीटर।

यहोवा की पवित्र वस्तुओं के संभवतः विशेष भेंट हैं जिन्हें व्यक्ति चढ़ाने का वचन देता है।

चाहिए। इस प्रकार याजक दोषबलि के मेड़े द्वारा उस व्यक्ति के पाप को धोएगा और यहोवा उसके पाप को क्षमा करेगा।

17“यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और जिन चीजों को न करने का आदेश यहोवा ने दिया है, उन्हें करता है तो इस बात का कोई महत्व नहीं कि वह इसे नहीं जानता। वह व्यक्ति अपराधी है और उसे अपने पाप का फल भोगना होगा। 18उस व्यक्ति को एक निर्दोष मेड़ा अपनी रेवड़ से याजक के पास लाना चाहिए। मेड़ा दोषबलि होगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के उस पाप का भुगतान करेगा जिसे उसने अनजाने में किया। यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। 19व्यक्ति अपराधी है चाहे वह यह न जानता हो कि वह पाप कर रहा है। इसलिए उसे यहोवा को दोषबलि देनी होगी।”

बेईमान लोगों की दोषबलि

6 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“कोई व्यक्ति यहोवा के प्रति इनमें से किसी एक को करके अपराध कर सकता है: वह किसी अन्य के लिए जिसकी वह देखभाल कर रहा हो, उसे कुछ होने के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति अपने दिए वचन* के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति कुछ चुरा सकता है, या कोई व्यक्ति किसी को ठग सकता है, 3अथवा किसी को कोई खोई चीज मिले और तब वह उसके विषय में झूठ बोल सकता है या कोई व्यक्ति कुछ करने का वचन दे सकता है और तब अपने दिए गए वचन को पूरा नहीं करता है, अथवा कोई कुछ अन्य बुरा कर सकता है। 4यदि कोई व्यक्ति इनमें से किसी को करता है तो वह पाप करने का दोषी है। उस व्यक्ति को जो कुछ उसने चुराया हो या ठगकर जो कुछ लिया हो या किसी व्यक्ति के कहने से उसकी धरोहर के रूप में जो रखा हो, या किसी का खोया हुआ पाकर उसके बारे में झूठ बोला हो 5या जिस किसी के बारे में झूठा वचन दिया हो, वह उसे लौटाना चाहिए। उसे पूरा मूल्य चुकाना चाहिए और तब उसे वस्तु के मूल्य का पाँचवाँ हिस्सा अतिरिक्त देना चाहिए। उसे असली मालिक को धन देना चाहिए। उसे यह उसी दिन करना चाहिए जिस दिन वह दोषबलि लाए।

6“उस व्यक्ति को दोषबलि याजक के पास लाना चाहिए। यह रेवड़ से एक मेड़ा होना चाहिए। मेड़े में कोई दोष नहीं होना चाहिए। यह उसी मूल्य का होना चाहिए जो याजक कहे। यह यहोवा को दी गई दोषबलि होगी। 7तब याजक यहोवा के पास जाएगा और उस व्यक्ति के

अपने दिए वचन “बन्धक सा सुरक्षा धन” यह ऐसा कुछ है जिसे तुम किसी व्यक्ति को इस बात के प्रमाण के रूप में देते हो कि तुम उससे कुछ अधिक महत्वपूर्ण करोगे।

उन पापों के लिए भुगतान करेगा जिनका वह अपराधी है, और यहोवा उस व्यक्ति को उन सभी पापों के लिए क्षमा करेगा जिन्होंने उसे अपराधी बनाया।”

होमबलि

8यहोवा ने मूसा से कहा, 9“हारून और उसके पुत्रों को यह आदेश दो: यह होमबलि का नियम है। होमबलि को वेदी के अग्नि कुण्ड में पूरी रात सवेरा होने तक रखना चाहिए। वेदी की आग को वेदी पर जलती रहनी चाहिए। 10याजक को सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहनने चाहिए। उसे अपने शरीर से चिपका सन का अन्तर्वस्त्र पहनना चाहिए। तब याजक को वेदी पर होमबलि पर जलने के बाद बची हुई राख को उठाना चाहिए। याजक को वेदी की एक ओर राख को रखना चाहिए। 11तब याजक को अपने वस्त्रों को उतारना चाहिए और अन्य वस्त्र पहनने चाहिए। तब उसे डेरे से बाहर स्वच्छ स्थान पर राख ले जानी चाहिए। 12किन्तु वेदी की आग वेदी में जलती रहनी चाहिए। इसे बुझाने नहीं देना चाहिए। याजक को हर सुबह वेदी पर लकड़ी जलानी चाहिए। उसे वेदी पर लकड़ी रखनी चाहिए। उसे मेलबलि की चर्बी जलानी चाहिए। 13वेदी पर आग लगातार जलती रहनी चाहिए। यह बुझनी नहीं चाहिए।

अन्नबलि

14“अन्नबलि का यह नियम है कि: हारून के पुत्रों को वेदी के सामने यहोवा के लिए इसे लाना चाहिए। 15याजक को अन्नबलि में से मुट्ठी भर उत्तम आटा लेना चाहिए। तेल और लोबान अन्नबलि पर अवश्य होना चाहिए। याजक को अन्नबलि को वेदी पर जलाना चाहिए। यह यहोवा को एक सुगन्धित और स्मृति भेंट होगी।

16“हारून और उसके पुत्रों को बची हुई अन्नबलि को खाना चाहिए। अन्नबलि एक प्रकार की अखमीरी रोटी की भेंट है। याजक को इस रोटी को पवित्र स्थान में खाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के आँगन में अन्नबलि खानी चाहिए। 17अन्नबलि खमीर के साथ नहीं पकाई जानी चाहिए। मुझको (यहोवा को) आग द्वारा दी जाने वाली बलि में से उनके (याजकों के) भाग के रूप में मैंने इसे दिया है। यह पापबलि तथा दोषबलि के समान अत्यन्त पवित्र है। 18हारून की सन्तानों में से हर एक लड़का आग द्वारा यहोवा को चढ़ाई गई भेंट में से खा सकता है। यह तुम्हारी पीढ़ियों का सदा के लिए नियम है। इन बलियों का स्पर्श उन व्यक्तियों को पवित्र करता है।”*

इन... करता है इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: इन्हें जो कोई छुए उसे पहले पवित्र (शुद्ध) हो लेना चाहिए।

याजकों की अन्नबलि

19 यहोवा ने मूसा से कहा, 20 "हारून तथा उसके पुत्रों को जो बलि यहोवा को लानी चाहिए, वह यह है। उन्हें यह उस दिन करना चाहिए जिस दिन हारून का अभिषेक हुआ है। उन्हें सदा दो कर्वाट* उत्तम महीन आटा अन्नबलि के लिए लेना चाहिए। उन्हें इसका आधा प्रातःकाल तथा आधा सन्ध्या काल में लाना चाहिए। 21 उत्तम महीन आटे में तेल मिलाना चाहिए और उसे कड़ाही में भूनना चाहिए। जब यह भुन जाए तब इसे अन्दर लाना चाहिए। तुम्हें अन्नबलि का चूरमा बना लेना चाहिए। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

22 हारून के वंश में से वह याजक जिसका हारून के स्थान पर अभिषेक हो, यहोवा को यह अन्नबलि चढ़ाए। यह नियम सदा के लिये है। यहोवा के लिए अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। 23 याजक की हर एक अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। इसे खाना नहीं चाहिए।"

पापबलि के नियम

24 यहोवा ने मूसा से कहा, 25 "हारून और उसके पुत्रों से कहो: पापबलि के लिए यह नियम है कि पापबलि को भी वहीं मारा जाना चाहिए जहाँ यहोवा के सामने होमबलि को मारा जाता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 26 उस याजक को इसे खाना चाहिए, जो पापबलि चढ़ाता है। उसे पवित्र स्थान पर मिलापवाले तम्बू के आँगन में इसे खाना चाहिए। 27 पापबलि के माँस का स्पर्श किसी भी व्यक्ति को पवित्र करता है। यदि छिड़का हुआ खून किसी के वस्त्रों पर पड़ता है तो उन वस्त्रों को धो दिया जाना चाहिए। तुम्हें उन वस्त्रों को एक निश्चित, पवित्र स्थान में धोना चाहिए। 28 यदि पापबलि किसी मिट्टी के बर्तन में उबाली जाए तो उस बर्तन को फोड़ देना चाहिए। यदि पापबलि को काँसे के बर्तन में उबाला जाय तो बर्तन को माँजा जाए और पानी में धोया जाए।

29 "परिवार का प्रत्येक पुरुष सदस्य याजक, पापबलि को खा सकता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 30 किन्तु यदि पापबलि का खून पवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए मिलापवाले तम्बू में ले जाया गया हो तो पापबलि को आग में जला देना चाहिए। याजक उस पापबलि को नहीं खा सकते।

दोषबलि

7 "दोषबलि के लिए यह नियम है। यह अत्यन्त पवित्र है। 2 याजक को दोषबलि को उसी स्थान पर मारना चाहिए जिस पर वह होमबलियों को मारता है। याजक को दोषबलि में से वेदी के चारों ओर खून छिड़कना

चाहिए। याजक को दोषबलि की सारी चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, 4दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी, पुट्टों की चर्बी, और कलेजे की चर्बी चढ़ानी चाहिए। याजक को वेदी पर उन सभी चीजों को जलाना चाहिए। ये यहोवा को आग द्वारा दी गई बलि होगी। यह दोषबलि है।

6 "हर एक पुरुष जो याजक है, दोषबलि खा सकता है। यह बहुत पवित्र है। अतः इसे एक निश्चित पवित्र स्थान में खाना चाहिए। 7 दोषबलि पापबलि के समान है। दोनों के लिए एक जैसे नियम हैं। वह याजक, जो बलि चढ़ाता है, उसको वह प्राप्त करेगा। 8 वह याजक जो बलि चढ़ाता है चमड़ा भी होमबलि से ले सकता है। 9 हर एक अन्नबलि चढ़ाने वाले याजक की होती है। याजक उन अन्नबलियों को लेगा जो चूल्हे में पकी हों, या कड़ाही में पकी हों या तवे पर पकी हों। 10 अन्नबलि हारून के पुत्रों की होगी। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि वे सूखी अथवा तेल मिली हैं। हारून के पुत्र याजक समान भागीदार होंगे।

मेलबलि

11 "ये मेलबलि के नियम हैं, जिसे कोई व्यक्ति यहोवा को चढ़ाता है: 12 कोई व्यक्ति मेलबलि अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ला सकता है। यदि वह कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बलि लाता है तो उसे तेल मिले अखमीरी फुलके, अखमीरी चपातियाँ और तेल मिले उत्तम आटे के फुलके भी लाने चाहिए। 13 उस व्यक्ति को अपनी मेलबलि के लिए खमीरी रोटियों के साथ अपनी बलि लानी चाहिए। यह वह बलि है जिसे कोई व्यक्ति यहोवा के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए लाता है। 14 उन रोटियों में से एक उस याजक की होगी जो मेलबलि के खून को छिड़कता है। 15 इस मेलबलि का माँस उसी दिन खाया जाना चाहिए जिस दिन यह चढ़ाया जाए। कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यह भेंट चढ़ाता है। किन्तु कुछ भी माँस अगले दिन के लिए नहीं बचना चाहिए।

16 "कोई व्यक्ति मेलबलि यहोवा को केवल भेंट चढ़ाने की इच्छा से ला सकता है अथवा सम्भवतः उस व्यक्ति ने यहोवा को विशेष वचन दिया हो। यदि यह सत्य है तो बलि उसी दिन खायी जानी चाहिए जिस दिन वह उसे चढ़ाये। यदि कुछ बच जाए तो उसे अगले दिन खा लेना चाहिए। 17 किन्तु यदि इस बलि का कुछ माँस फिर भी तीसरे दिन के लिए बच जाए तो उसे आग में जला दिया जाना चाहिए। 18 यदि कोई व्यक्ति मेलबलि का माँस तीसरे दिन खाता है तो यहोवा उस व्यक्ति से प्रसन्न नहीं होगा। यहोवा उस बलि को उसके लिए महत्त्व नहीं देगा। यह बलि घृणित वस्तु बन जाएगी और यदि कोई व्यक्ति

उस माँस का कुछ भी खाता है तो वह अपने पाप के लिए उत्तरदायी होगा।

19"लोगों को ऐसा माँस भी नहीं खाना चाहिए जिसे कोई अशुद्ध वस्तु छू ले। उन्हें इस माँस को आग में जला देना चाहिए। वे सभी व्यक्ति जो शुद्ध हों, मेलबलि का माँस खा सकते हैं। 20किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपवित्र हो और यहोवा के लिए मेलबलि में से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर देना चाहिए।

21"सम्भव है कि कोई व्यक्ति कोई ऐसी चीज़ छू ले जो अशुद्ध है। यह चीज़ लोगों द्वारा या गन्दे जानवर द्वारा या किसी घृणित गन्दी चीज़ द्वारा अशुद्ध बनाई जा सकती है। वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा और यदि वह यहोवा के लिए मेलबलि से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग कर देना चाहिए।"

22यहोवा ने मूसा से कहा, 23"इब्राएल के लोगों से कहो: तुम लोगों को गाय, भेड़ और बकरी की चर्बी नहीं खानी चाहिए। 24तुम उस जानवर की चर्बी का प्रयोग कर सकते हो जो स्वतः मरा हो या अन्य जानवरों द्वारा फाड़ दिया गया हो। किन्तु तुम उस जानवर को कभी नहीं खाना। 25यदि कोई व्यक्ति उस जानवर की चर्बी खाता है जो यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ाया गया हो तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए। 26तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हें किसी पक्षी या जानवर का खून कभी नहीं खाना चाहिए। 27यदि कोई व्यक्ति कुछ खून खाता है तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।"

उत्तोलन बलि के नियम

28यहोवा ने मूसा से कहा, 29"इब्राएल के लोगों से कहो: यदि कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि लाए तो उस व्यक्ति को उस भेंट का एक भाग यहोवा को देना चाहिए। 30भेंट का वह भाग आग में जलाया जाएगा। उसे उस भेंट का वह भाग अपने हाथ में लेकर चलना चाहिए। उसे जानवर की छाती की चर्बी लेकर चलना चाहिए और छाती को याजक के पास ले जाना चाहिए। छाती को यहोवा के सामने ऊपर उठाया जायेगा। यह उत्तोलन बलि होगी। 31तब याजक को वेदी पर चर्बी जलानी चाहिए। किन्तु जानवर की छाती हारून और उसके पुत्रों की होगी। 32मेलबलि से दायीं जांघ हारून के पुत्रों में से याजक को देनी चाहिये। 33मेलबलि में से दायीं जांघ उस याजक की होगी जो मेलबलि की चर्बी और खून चढ़ाता है। 34मैं (यहोवा) उत्तोलन बलि की छाती तथा मेलबलि की दायीं जांघ इब्राएल के लोगों से ले रहा हूँ और मैं उन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों को दे रहा हूँ। इब्राएल के लोगों के लिए यह नियम सदा के लिए होगा।"

35यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट हारून और उसके पुत्रों की है, जब कभी हारून और उसके पुत्र यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते हैं तब वे बलि का वह भाग पाते हैं। 36जिस समय यहोवा ने याजकों का अभिषेक किया उसी समय उन्होंने इब्राएल के लोगों को वे भाग याजकों को देने का आदेश दिया। वे भाग सदा उनकी पीढ़ी याजकों को दिए जाने हैं।

37ये होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों की नियुक्ति, और मेलबलि के नियम हैं। 38यहोवा ने सूनै पर्वत पर ये नियम मूसा को दिए। यहोवा ने ये नियम उस दिन दिए जिस दिन उसने इब्राएल के लोगों को सूनै मरुभूमि में यहोवा के लिए अपनी भेंट लाने का आदेश दिया था।

मूसा हारून और उसके पुत्रों को उपासना के लिए पवित्र करता है

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून और उसके साथ उसके पुत्रों, उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पापबलि का बैल, दो भेड़ें और अरखमीरी मैदे के फुलके की टोकरी लो, तब मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लोगों को एक साथ लाओ।"

4मूसा ने वही किया जो यहोवा ने उसे आदेश दिया। लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ मिले। 5तब मूसा ने लोगों से कहा, "यह वही है जिसे करने का आदेश यहोवा ने दिया है।"

6तब मूसा, हारून और उसके पुत्रों को लाया। उसने उन्हें पानी से नहलाया। 7तब मूसा ने हारून को अन्तःवस्त्र पहनाया। मूसा ने हारून के चारों ओर एक पेटी बाँधी। तब मूसा ने हारून को बाहरी लबादा पहनाया। इसके ऊपर मूसा ने हारून को चोगा पहनाया और उस पर एपोद पहनाई, फिर उस पर सुन्दर पटुका बाँधा। 8तब मूसा ने न्याय की थैली की जेब में ऊरिम और तुम्मीम रखा। 9मूसा ने हारून के सिर पर पगड़ी भी बाँधी। मूसा ने इस पगड़ी के अगले भाग पर सोने की पट्टी बाँधी। यह सोने की पट्टी पवित्र मुकुट के समान है। मूसा ने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

10तब मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और पवित्र तम्बू तथा इसमें की सभी चीज़ों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया। 11मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल वेदी पर सात बार छिड़का। मूसा ने वेदी, उसके उपकरणों और तश्तरियों का अभिषेक किया। मूसा ने बड़ी चिलमची और उसके आधार पर भी अभिषेक का तेल छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया। 12तब मूसा ने अभिषेक के कुछ तेल को हारून के सिर पर डाला। इस प्रकार उसने हारून को पवित्र किया। 13तब मूसा हारून के पुत्रों को लाया और उन्हें विशेष वस्त्र पहनाए। उसने उन्हें पटुके पेटियाँ बाँधी। तब

उसने उन के सिर पर पगडि़याँ बाँधी। मूसा ने ये सब वैसे ही किया जैसे यहोवा ने आदेश दिया था।

14तब मूसा पापबलि के बैल को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथों को पापबलि के बैल के सिर पर रखा। 15तब मूसा ने बैल को मारा। मूसा ने उसके खून को लिया। मूसा ने अपनी उँगली का उपयोग किया और कुछ खून वेदी पर के सभी कोनों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने वेदी को बलि के लिए शुद्ध किया। तब मूसा ने वेदी की नींव पर खून को उँडेला। इस प्रकार मूसा ने वेदी को लोगों के पापों के भुगतान के लिए पाप बलियों के लिए तैयार किया। 16मूसा ने बैल के भीतरी भागों से सारी चर्बी ली। मूसा ने दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी ली। तब उसने उन्हें वेदी पर जलाया। 17किन्तु मूसा बैल के चमड़े, उसके मौस और शरीर के व्यर्थ भीतरी भाग को डेरे के बाहर ले गया। मूसा ने डेरे के बाहर आग में उन चीज़ों को जलाया। मूसा ने ये सब वैसे ही किया जैसा यहोवा ने आदेश दिया था।

18मूसा होमबलि के मेढ़े को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 19तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने वेदी के चारों ओर खून छिड़का। 20-21मूसा ने मेढ़े को टुकड़ों में काटा। मूसा ने भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोया। तब मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया। मूसा ने उसका सिर, टुकड़े और चर्बी को जलाया। यह आग द्वारा होमबलि थी। यह यहोवा के लिए सुगन्ध थी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वे सब काम किए।

22तब मूसा दूसरे मेढ़े को लाया। इस मेढ़े का उपयोग हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाने के लिए किया गया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 23तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने इसका कुछ खून हारून के कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और हारून के दाएं पैर के अंगूठे पर लगाया। 24तब मूसा हारून के पुत्रों को वेदी के पास लाया। मूसा ने कुछ खून उनके दाएं कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और उनके दाएं पैर के अंगूठों पर लगाया। तब मूसा ने वेदी के चारों ओर खून डाला। 25मूसा ने चर्बी, चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भाग की सारी चर्बी, कलेजे को ढकने वाली चर्बी, दोनों गुर्दे और उनकी चर्बी और दायीं जाँघ को लिया। 26एक टोकरी अखमीरी मैदे के फुलके हर एक दिन यहोवा के सामने रखी जाती है। मूसा ने उन फुलकियों में से एक रोटी, और एक तेल से सनी फुलकी, और एक अखमीरी चपाती ली। मूसा ने उन फुलकियों के टुकड़ों को चर्बी तथा मेढ़े की दायीं जाँघ पर रखा। 27तब मूसा ने उन सभी को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखा। मूसा ने उन टुकड़ों को

यहोवा के सामने उतोलन बलि के रूप में हाथों में ऊपर उठवाया। 28तब मूसा ने इन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों के हाथों से लिया। मूसा ने उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। इस प्रकार वह बलि हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करने के लिए थी। यह आग द्वारा दी गई बलि थी। यह यहोवा को प्रसन्न करने के लिए सुगन्ध थी। 29तब मूसा ने उस मेढ़े की छाती को लिया और यहोवा के सामने उतोलन बलि के लिए ऊपर उठवाया। याजकों को नियुक्त करने के लिए यह मूसा के हिस्से का मेढ़ा था। यह ठीक वैसे ही था जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 30मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल और वेदी पर का कुछ खून लिया। मूसा ने उस में से थोड़ा हारून और उसके वस्त्रों पर छिड़का और कुछ हारून के उन पुत्रों पर जो उसके साथ थे और कुछ उनके वस्त्रों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने हारून, उसके वस्त्रों, उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों को पवित्र बनाया।

31तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, "क्या तुम्हें मेरा आदेश* याद है? मैंने कहा, 'हारून और उसके पुत्र इन चीज़ों को खाएंगे।' अतः याजक नियुक्ति संस्कार से रोटी की टोकरी और माँस लो। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस माँस को उबालो। तुम उस माँस और उस रोटी को उसी स्थान पर खाओगे। 32यदि कुछ माँस या रोटी बच जाए तो उसे जला देना। 33याजक नियुक्ति संस्कार सात दिन तक चलेगा। तुम मिलापवाले तम्बू से तब तक नहीं जाओगे जब तक तुम्हारा याजक नियुक्ति संस्कार का समय पूरा नहीं हो जाता। 34यहोवा ने उन कामों को करने का आदेश दिया था जो आज किए गए उन्होंने तुम्हारे पापों के भुगतान के लिए यह आदेश दिया था। 35तुम्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक, पूरे दिन रात रहना चाहिए। यदि तुम यहोवा का आदेश नहीं मानते हो तो तुम मर जाओगे। यहोवा ने मुझे ये आदेश दिया था।" 36इसलिए हारून और उसके पुत्रों ने वह सब कुछ किया जिसे करने का आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

परमेश्वर द्वारा याजकों को स्वीकृति

9 आठवें दिन, मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को बुलाया। उस ने इज़्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को भी बुलाया। 2मूसा ने हारून से कहा, "अपने पशुओं में से एक बछड़ा और एक मेढ़ा लो। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। बछड़ा पापबलि होगा और मेढ़ा होमबलि होगा। इन जानवरों को यहोवा को भेंट करो।

मेरा आदेश यहाँ मेरा आदेश से अभिप्राय है मेरे द्वारा दिया गया यहोवा का आदेश मूसा का वचन, यहोवा का वचन है क्योंकि वह यहोवा का प्रवक्ता है। इसलिए यहाँ मूसा ने यहोवा के आदेश को मेरा आदेश कहा है।

३इसलिए के लोगों से कहो, 'पापबलि हेतु एक बकरा लो। एक बछड़ा और एक मेमना होमबलि के लिए लो। बछड़ा और मेमना दोनों एक वर्ष के होने चाहिए। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। एक साँड़ और एक मेडा मेलबलि के लिए लो। उन जानवरों को और तेल मिली अन्नबलि लो और उन्हें यहोवा को भेंट चढ़ाओ। क्यों? क्योंकि आज यहोवा की महिमा तुम्हारे सामने प्रकट होगी।”

५इसलिए सभी लोग मिलापवाले तम्बू में आए और वे सभी उन चीजों को लाए जिनके लिए मूसा ने आदेश दिया था। सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। ६मूसा ने कहा, “तुमने वही किया है जो यहोवा ने आदेश दिया। तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे।”

७तब मूसा ने हारून से ये बातें कहीं, “जाओ और वह करो जिसके लिए यहोवा ने आदेश दिया था। वेदी के पास जाओ और पापबलि तथा होमबलि चढ़ाओ। यह सब अपने और लोगों के पापों के भुगतान के लिए करो। तुम लोगों की लायी हुई बलि को लो और उसे यहोवा को अर्पित करो। यह उनके पापों का भुगतान होगा।”

८इसलिए हारून वेदी के पास गया। उसने बछड़े को पापबलि हेतु मारा। यह पापबलि स्वयं उसके अपने लिए थी। ९तब हारून के पुत्र हारून के पास खून लाए। हारून ने अपनी उँगली खून में डाली और वेदी के सिरों पर इसे लगाया। तब हारून ने वेदी की नींव पर खून उँडेला। १०हारून ने पापबलि से चर्बी, गुर्दे और कलेजे की चर्बी को लिया। उस ने उन्हें वेदी पर जलाया। उसने उसी प्रकार किया जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। ११तब हारून ने डेरे के बाहर मॉस और चमड़े को जलाया। १२इसके बाद, हारून ने होमबलि के लिए उस जानवर को मारा। जानवर को टुकड़ों में काटा गया। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए और हारून ने वेदी के चारों ओर खून डाला। १३हारून के पुत्रों ने उन टुकड़ों और होमबलि का सिर हारून को दिया। तब हारून ने उन्हें वेदी पर जलाया। १४हारून ने होमबलि के भीतरी भागों और पैरों को धोया और उसने उन्हें वेदी पर जलाया।

१५तब हारून लोगों की बलि लाया। उसने लोगों के लिए पापबलि वाले बकरे को मारा। उसने बकरे को पहले की तरह पापबलि के लिए चढ़ाया। १६हारून होमबलि को लाया और उसने वह बलि चढ़ाई। वैसे ही जैसे यहोवा ने आदेश दिया था। १७हारून अन्नबलि को वेदी के पास लाया। उसने मुट्ठी भर अन्न लिया और प्रातः काल की नित्य बलि के साथ उसे वेदी पर रखा। १८हारून ने लोगों के लिए मेलबलि के साँड़ और मेडे को मारा। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए। हारून ने इस खून को वेदी के चारों ओर उँडेला।

१९हारून के पुत्र साँड़ और मेडे की चर्बी भी लाए। वे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, गुर्दे और कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लाए। २०हारून के पुत्रों ने चर्बी के इन भागों को साँड़ और मेडे की छातियों पर रखा। हारून ने चर्बी के भागों को लेकर उसे वेदी पर जलाया। २१मूसा के आदेश के अनुसार हारून ने छातियों और दायाँ जाँघ को उत्तोलन भेंट के लिए यहोवा के सामने हाथों में ऊपर उठाया।

२२तब हारून ने अपने हाथ लोगों की ओर उठाए और उन्हें आशीर्वाद दिया। हारून पापबलि, होमबलि और मेलबलि को चढ़ाने के बाद वेदी से नीचे उतर आया। २३मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए और फिर बाहर आकर उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया। यहोवा की उपस्थिति से सभी लोगों के सामने तेज प्रकट हुआ। २४यहोवा से अग्नि प्रकट हुई और उसने वेदी पर होमबलि और चर्बी को जलाया। सभी लोगों ने जब यह देखा तो वे चिल्लाए और उन्होंने धरती पर गिरकर प्रणाम किया।

परमेश्वर की ज्वाला द्वारा विनाश

१० फिर तभी हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू ने पाप किया। दोनों पुत्रों ने लोबान जलाने के लिए तश्तरी ली। उन्होंने एक अलग ही आग का प्रयोग किया और लोबान को जलाया। उन्होंने उस आग का उपयोग नहीं किया जिसके उपयोग का आदेश मूसा ने उन्हें दिया था। २इसलिए यहोवा से ज्वाला प्रकट हुई और उसने नादाब और अबीहू को नष्ट कर दिया। वे यहोवा के सामने मरे।

३तब मूसा ने हारून से कहा, “यहोवा कहता है, ‘जो याजक मेरे पास आए, उन्हें मेरा सम्मान करना चाहिए! मैं उन के लिये और सब ही के लिये पवित्र माना जाऊँ।” इसलिए हारून अपने मरे हुए पुत्रों के लिए खामोश रहा।

४हारून के चाचा उज्जीएल के दो पुत्र थे। वे मीशाएल और एलसाफान थे। मूसा ने उन पुत्रों से कहा, “पवित्र स्थान के सामने के भाग में जाओ। अपने चचेरे भाइयों के शवों को उठाओ और उन्हें डेरे के बाहर ले जाओ।”

५इसलिए मीशाएल और एलसाफान ने मूसा का आदेश माना। वे नादाब और अबीहू के शवों को बाहर लाए। नादाब और अबीहू तब तक अपने विशेष अन्तःवस्त्र पहने थे।

६तब मूसा ने हारून और उसके अन्य पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार से बात की। मूसा ने उनसे कहा, “कोई शोक प्रकट न करो! अपने वस्त्र न फाड़ो या अपने बालों को न बिखेरो! शोक प्रकट न करो, तुम मरोगे नहीं और यहोवा तुम सभी लोगों से अप्रसन्न नहीं होगा। इस्राएल का पूरा राष्ट्र तुम लोगों का सम्बन्धी है। वे यहोवा द्वारा नादाब और अबीहू के जलाने के विषय में

रो पीट सकते हैं। 7किन्तु तुम लोगों को मिलापवाला तम्बू भी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तुम लोग उस द्वार से बाहर जाओगे तो मर जाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम ने लगा रखा है।" सो हारून, एलीआज़ार और ईतामार ने मूसा की आज्ञा मानी।

8तब यहोवा ने हारून से कहा, 9"तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों को दाखमधु या मद्य उस समय नहीं पीनी चाहिए जब तुम लोग मिलापवाले तम्बू में आओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो मर जाओगे! यह नियम तुम्हारी पीढ़ियों में सदा चलता रहेगा। 10तुम्हें, जो चीजें पवित्र हैं तथा जो पवित्र नहीं हैं, जो शुद्ध हैं और जो शुद्ध नहीं हैं उनमें अन्तर करना चाहिए। 11यहोवा ने मूसा को अपने नियम दिए और मूसा ने उन नियमों को लोगों को दिया। "हारून, तुम्हें उन सभी नियमों की शिक्षा लोगों को देनी चाहिए।"

12अभी तक हारून के दो पुत्र एलीआज़ार और ईतामार जीवित थे। मूसा ने हारून और उसके दोनों पुत्रों से बात की। मूसा ने कहा, "कुछ अन्नबलि उन बलियों में से बची है जो आग में जलाई गई थी। तुम लोग अन्नबलि का वह भाग खाओगे। किन्तु तुम लोगों को इसे बिना ख़मीर मिलाए खाना चाहिये। इसे वेदी के पास खाओ। क्यों? क्योंकि वह भेंट बहुत पवित्र है। 13वह उस भेंट का भाग है, जो यहोवा के लिए आग में जलाई गई थी और जो नियम मैंने तुमको बताया, वह सिखाता है कि वह भाग तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का है। किन्तु तुम्हें इसे पवित्र स्थान पर ही खाना चाहिए।

14"तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ भी उत्तोलन बलि से छाती को और मेलबलि से जाँघ को खा सकेंगे। इन्हें तुम्हें किसी पवित्र स्थान पर नहीं खाना है। बल्कि तुम्हें इन्हें किसी शुद्ध स्थान पर खाना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये मेलबलियों में से मिली है। इज़्राएल के लोग ये बलि यहोवा को देते हैं। उन जानवरों के कुछ भाग को लोग खाते हैं किन्तु छाती और जाँघ तुम्हारा भाग है। 15लोगों को अपने जानवरों की चर्बी आग में जलाई जाने वाली बलि के रूप में लानी चाहिए। उन्हें मेलबलि की जाँघ और उत्तोलन बलि की छाती भी लानी चाहिए। उसे यहोवा के सामने उत्तोलित करना होगा और यह बलि तुम्हारा भाग होगा। यह तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का होगा। यहोवा के आदेश के अनुसार बलि का वह भाग सदा तुम्हारा होगा।"

16मूसा ने पापबलि के बकरे के बारे में पूछा। किन्तु उसे पहले ही जला दिया गया था। मूसा हारून के शेष पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार पर बहुत क्रोधित हुआ। मूसा ने कहा, 17"तुम लोगों को यह बकरा पवित्र स्थान पर खाना था। यह बहुत पवित्र है! तुम लोगों ने इसे यहोवा के सामने क्यों नहीं खाया? यहोवा ने उसे तुम लोगों के अपराधों को दूर करने के लिए दिया। वह

बकरा लोगों के पापों के भुगतान के लिए था। 18देखो! तुम उस बकरे का खून पवित्र स्थान के भीतर नहीं लाए। तुम्हें इस बकरे को पवित्र स्थान पर खाना था जैसा कि मैंने आदेश दिया है।"

19किन्तु हारून ने मूसा से कहा, "सुनों, आज वे अपनी पापबलि और होमबलि यहोवा के सामने लाए। किन्तु तुम जानते हो कि आज मेरे साथ क्या हुआ! क्या तुम यह समझते हो कि यदि मैं पापबलि को आज खाऊँगा तो यहोवा प्रसन्न होगा? नहीं!" * 20जब मूसा ने यह सुना तो वह सहमत हो गया।

माँस भोजन के नियम

1 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"इज़्राएल के लोगों से कहो: ये जानवर हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: यदि जानवर के खुर दो भागों में बँटे हों और वह जानवर जुगाली भी करता हो तो तुम उस जानवर का माँस खा सकते हो।

ऐसे जानवर जिनका माँस नहीं खाना चाहिए

46"कुछ जानवर जुगाली करते हैं, किन्तु उनके खुर फटे नहीं होते। तो ऐसे जानवरों को मत खाओ—ऊँट, शापान और खरगोश वैसे हैं, इसलिए वे तुम्हारे लिए अपवित्र हैं। 7अन्य जानवर दो भागों में बँटी खुरों वाले हैं, किन्तु वे जुगाली नहीं करते। उन जानवरों को मत खाओ। सुअर वैसे ही हैं, अतः वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। 8उन जानवरों का माँस मत खाओ! उनके शव को छूना भी मत! वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं!

समुद्री भोजन के नियम

9"यदि कोई जानवर समुद्र या नदी में रहता है और उसके पंख और परतें हैं तो तुम उस जानवर को खा सकते हो। 10-11किन्तु यदि जानवर समुद्र या नदी में रहता है और उसके पंख और परतें नहीं होतीं तो उस जानवर को तुम्हें नहीं खाना चाहिए। वह गन्दे जानवरों में से एक है। उस जानवर का माँस मत खाओ। उसके शव को छूना भी मत! 12तुम्हें पानी के हर एक जानवर को, जिसके पंख और परतें नहीं होतीं, उसे धिनौने जानवरों में समझना चाहिए।

अभोज्य पक्षी

13"तुम्हें निम्न पक्षियों को भी धिनौने पक्षी समझना चाहिए। इन पक्षियों में से किसी को मत खाओ : उकाब, गिद्ध, शिकारी पक्षी, 14चील, सभी प्रकार के बाज नामक पक्षी, 15सभी प्रकार के काले पक्षी, 16शुतुमुर्ग, सींग

क्या ... नहीं हारून अपने दो पुत्रों की मृत्यु के कारण इतना अधिक परेशान था कि पापबलि को नहीं खा सका था।

वाला उल्लू, समुद्री जलमर्ग, सभी प्रकार के बाज, 17 उल्लू, समुद्री काग, बड़ा उल्लू, 18 जलमर्ग, मछली खाने वाले पेलिकन नामक खेत जलपक्षी, समुद्री गिद्ध, 19 हंस, सभी प्रकार के सारस, कठफोड़वा और चमगादड़।

कीटपतंगों को खाने के नियम

20" और सभी ऐसे कीट पतंगे जिनके पंख होते हैं तथा जो रेंग कर चलते भी हैं। ये धिनौने कीट पतंगे हैं! 21 किन्तु यदि पतंगों के पंख हैं और वह रेंग कर चलता भी है तथा उसके पैरों के ऊपर टांगों में ऐसे जोड़ हैं कि वह उछल सके तो तुम उन पतंगों को खा सकते हो। 22 ये पतंगे हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: हर प्रकार की टिड्डियाँ, हर प्रकार की संपंख टिड्डियाँ, हर प्रकार के झींगुर, हर प्रकार के टिड्डे।

23" किन्तु अन्य सभी वे कीट पतंगे जिनके पंख हैं और जो रेंग भी सकते हैं, तुम्हारे लिये धिनौने प्राणी हैं। 24 वे कीट पतंगे तुमको अशुद्ध करेंगे। कोई व्यक्ति जो मरे कीट पतंगे को छुएगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 25 यदि कोई मरे कीट पतंगों में से किसी को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने कपड़े धो लेने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

धिनौने जानवरों के विषय में अन्य नियम

26-27" कुछ जानवरों के खुर फटे होते हैं किन्तु खुर के ठीक-ठीक दो भाग नहीं होते। कुछ जानवर जुगाली नहीं करते। कुछ जानवरों के खुर नहीं होते, वे अपने पंजों* पर चलते हैं ऐसे सभी जानवर तुम्हारे लिए धिनौने हैं। कोई व्यक्ति, जो उन्हें छुएगा अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28 यदि कोई व्यक्ति उनके मरे शरीर को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। वे जानवर तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

रेंगने वाले जानवरों के बारे में नियम

29" ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए धिनौने हैं: छछून्दर, चूहा, सभी प्रकार के बड़े गिरगिट, 30 छिपकली, मगरमच्छ, गिरगिट, रेगिस्तानी गोहेर, और रंग बदलता गिरगिट। 31 ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए धिनौने हैं। कोई व्यक्ति जो उन मरे हुएों को छुएगा सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

धिनौने जानवरों के बारे में नियम

32" यदि किसी धिनौने जानवरों में से कोई मरा हुआ जानवर किसी चीज़ पर गिरे तो वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। यह लकड़ी, चमड़ा, कपड़ा, शोक वस्त्र या कोई

पंजें जानवरों के पैर। पंजों के तले में नाखून और नरम गद्दी होती है खुर की तरह कठोर भाग नहीं होता।

भी औज़ार हो सकता है। जो कुछ भी वह हो उसे पानी से धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। तब वह फिर शुद्ध हो जाएगा। 33 यदि उन गन्दे जानवरों में से कोई मरा हुआ मिट्टी के कटोरे में गिरे तो कटोरे की कोई भी चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। तुम्हें कटोरा अवश्य तोड़ देना चाहिए। 34 यदि अशुद्ध मिट्टी के कटोरे का पानी किसी भोजन पर पड़े तो भोजन अशुद्ध हो जाएगा। अपवित्र कटोरे में कोई भी दाखमधु अशुद्ध हो जाएगी। 35 यदि किसी मरे हुए धिनौने जानवर का कोई भाग किसी चीज़ पर आ पड़े तो वह चीज़ शुद्ध नहीं रहेगी। इसे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए। चाहे वह चूल्हा हो चाहे कड़ही। वे तुम्हारे लिए सदा अशुद्ध रहेगी।

36" कोई सोता या कुआँ, जिसमें पानी रहता है, शुद्ध बना रहेगा किन्तु कोई व्यक्ति जो किसी मरे धिनौने जानवर को छुएगा, अशुद्ध हो जाएगा। 37 यदि उन धिनौने मरे जानवरों का कोई भाग बोए जाने वाले बीज पर आ पड़े तो भी वह शुद्ध ही रहेगा। 38 किन्तु भिगोने के लिए यदि तुम कुछ बीजों पर पानी डालते हो और तब यदि मरे धिनौने जानवर का कोई भाग उन बीजों पर आ पड़े तो वे बीज तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

39" और भी, यदि भोजन के लिए उपयुक्त कोई जानवर अपने आप मर जाए तो जो व्यक्ति उसके मरे शरीर को छुएगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा 40 और उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। जो उस मृत जानवर के शरीर का माँस खाए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति मरे जानवर के शरीर को उठाए उसे भी अपने वस्त्रों को धोना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

41" हर एक ऐसा जानवर जो धरती पर रेंगता है, वो उन जानवरों में से एक है, जिसे यहोवा ने खाने को मना किया है। 42 तुम्हें ऐसे किसी भी रेंगने वाले जानवर को नहीं खाना चाहिए जो पेट के बल रेंगता है या चारों पैरों पर चलता है, या जिसके बहुत से पैर हैं। ये तुम्हारे लिए धिनौने जानवर हैं! 43 उन धिनौने जानवरों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। तुम्हें उनके साथ अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए। 44 क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं पवित्र हूँ इसलिए तुम्हें अपने को पवित्र रखना चाहिए। उन धिनौने रेंगने वाले जानवरों से अपने को धिनौना न बनाओ! 45 मैं तुम लोगों को मित्र से लाया। मैंने यह इसलिए किया कि तुम लोग मेरे विशेष जन बने रह सको। मैंने यह इसलिए किया कि मैं तुम्हारा परमेश्वर बन सकूँ। मैं पवित्र हूँ, अतः तुम्हें भी पवित्र रहना है!"

46 वे नियम सभी मवेशियों, पक्षियों और धरती के अन्य जानवरों के लिए हैं। वे नियम समुद्र में रहने वाले सभी जानवरों और धरती पर रेंगने वाले सभी जानवरों के लिए हैं। 47 वे उपदेश इसलिए हैं कि लोग शुद्ध

जानवरों और धिनौने जानवरों में अन्तर कर सकें। इस प्रकार लोग जानेंगे कि कौन सा जानवर खाने योग्य है और कौन सा खाने योग्य नहीं है।

नयी माताओं के लिए नियम

12 यहोवा ने मूसा से कहा, ¹इब्राएल के लोगों से कहो: यदि कोई स्त्री एक लड़के को जन्म देती है तो वह स्त्री सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यह उसके रक्त-प्राव के मासिकधर्म के समय अशुद्ध होने की तरह होगा। ³आठवें दिन लड़के का खतना होना चाहिए। ⁴खून की हानि से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध होने के तैंतीस दिन बाद तक यह होगा। उस स्त्री को वह कुछ नहीं छूना चाहिए जो पवित्र है। उसे पवित्र स्थान में तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक उसके पवित्र होने का समय पूरा न हो जाए। ⁵किन्तु यदि स्त्री लड़की को जन्म देती है तो माँ रक्त-प्राव के मासिक धर्म के समय की तरह दो सप्ताह तक शुद्ध नहीं होगी। वह अपने खून की हानि के छियासठ दिन बाद शुद्ध हो जाती है।

⁶“नई माँ जिसने अभी लड़की या लड़के को जन्म दिया है, ऐसी माँ के शुद्ध होने का विशेष समय पूरा होने पर उसे मिलापवाले तम्बू में विशेष भेंटें लानी चाहिए। उसे उन भेंटों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक को देना चाहिए। उसे एक वर्ष का मेमना होमबलि के लिए और पापबलि के हेतु एक फ़ाख़टा या कबूतर का बच्चा लाना चाहिए।

⁷⁻⁸“यदि स्त्री मेमना लाने में असमर्थ हो तो वह दो फ़ाख़ते या दो कबूतर के बच्चे ला सकती है। एक पक्षी होमबलि के लिए होगा तथा एक पापबलि के लिये। याजक यहोवा के सामने उन्हें अर्पित करेगा। इस प्रकार वह उसके लिए उसके पापों का भुगतान करेगा। तब वह अपने खून की हानि की अशुद्धि से शुद्ध होगी। ये नियम उन स्त्रियों के लिए हैं जो एक लड़का या लड़की को जन्म देती हैं।”

गंभीर चर्मरोगों के बारे में नियम

13 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, ²“किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई भयंकर सूजन हो सकती है, या खुजली अथवा सफेद दाग हो सकते हैं। यदि घाव चर्मरोग की तरह दिखाई पड़े तो व्यक्ति को याजक हारून या उसके किसी एक याजक पुत्र के पास लाया जाना चाहिए। ³याजकों को व्यक्ति के चर्म के घाव को देखना चाहिए। यदि घाव के बाल सफेद हो गए हों और घाव व्यक्ति के चर्म से अधिक गहरा मालूम हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जब याजक व्यक्ति की जाँच खत्म करे तो उसे घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है।

⁴“कभी-कभी किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई सफेद दाग हो जाता है किन्तु दाग चर्म से गहरा नहीं मालूम

होता। यदि वह सत्य हो तो याजक उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अन्य लोगों से अलग करे। ⁵सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति की जाँच करनी चाहिए। यदि याजक देखे कि घाव में परिवर्तन नहीं हुआ है और वह चर्म पर और अधिक फैला नहीं है तो याजक को और सात दिन के लिए उसे अलग करना चाहिए। ⁶सात दिन बाद याजक को उस व्यक्ति की फिर जाँच करनी चाहिए। यदि घाव सूख गया हो और चर्म पर फैला न हो, तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। वह केवल एक खुरंड है। तब रोगी को अपने वस्त्र धोने चाहिए और फिर से शुद्ध होना चाहिए।

⁷“किन्तु यदि व्यक्ति ने याजक को फिर अपने आपको शुद्ध बनाने के लिए दिखा लिया हो और उसके बाद चर्मरोग त्वचा पर अधिक फैलने लगे तो उस व्यक्ति को फिर याजक के पास आना चाहिए। ⁸याजक को जाँच करके देखना चाहिए। यदि घाव चर्म पर फैला हो तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है अर्थात् उसे कोई भयानक चर्मरोग है।

⁹“यदि व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हुआ हो तो उसे याजक के पास लाया जाना चाहिए। ¹⁰याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि चर्म पर सफेद दाग हो और उसमें सूजन हो, उस स्थान के बाल सफेद हों गए हो और यदि वहाँ घाव कच्चा हो ¹¹तो यह कोई भयानक चर्मरोग है जो उस व्यक्ति को बहुत समय से है। अतः याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर देना चाहिए। याजक उस व्यक्ति को केवल थोड़े से समय के लिए ही अन्य लोगों से अलग नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि वह जानता है कि वह व्यक्ति अशुद्ध है।

¹²“यदि कभी चर्मरोग व्यक्ति के सारे शरीर पर फैल जाए, वह चर्मरोग उस व्यक्ति के चर्म को सिर से पाँव तक ढक ले, ¹³और याजक देखे कि चर्मरोग पूरे शरीर को इस प्रकार ढके है कि उस व्यक्ति का पूरा शरीर ही सफेद हो गया है तो याजक को उसे शुद्ध घोषित कर देना चाहिए। ¹⁴किन्तु यदि व्यक्ति का चर्म घाव जैसा कच्चा हो तो वह शुद्ध नहीं है। ¹⁵जब याजक कच्चा चर्म देखे, तब उसे घोषित करना चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। कच्चा चर्म शुद्ध नहीं है। यह भयानक चर्मरोग है।

¹⁶“यदि चर्म फिर कच्चा पड़ जाये और सफेद हो जाये तो व्यक्ति को याजक के पास आना चाहिए। ¹⁷याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि रोग प्रस्त अंग सफेद हो गया हो तो याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति जिसे छूत रोग है, वह अंग शुद्ध है। सो वह व्यक्ति शुद्ध है।

¹⁸“हो सकता है कि शरीर के चर्म पर कोई फोड़ा हो। और फोड़ा ठीक हो जाय। ¹⁹किन्तु फोड़े की जगह पर सफेद सूजन, या गहरी लाली लिए सफेद और चमकीला

दाग रह जाय तब चर्म का यह स्थान याजक को दिखाना चाहिए। 20याजक को उसे देखना चाहिए। यदि सूजन चर्म से गहरा है और इस पर के बाल सफेद हो गये हैं तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है। वह दाग भयानक चर्मरोग है। यह फोड़े के भीतर से फूट पड़ा है। 21किन्तु यदि याजक उस स्थान को देखता है और उस पर सफेद बाल नहीं हैं और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि धुंधला है तो याजक को उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। 22यदि दाग का अधिक भाग चर्म पर फैलता है तब याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह छूत रोग है। 23किन्तु यदि सफेद दाग अपनी जगह बना रहता है, फैलता नहीं तो वह पुराने फोड़े का केवल धाव है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

24-25"किसी व्यक्ति का चर्म जल सकता है। यदि कच्चा चर्म सफेद या लालीयुक्त दाग होता है तो याजक को इसे देखना चाहिए। यदि वह दाग चर्म से गहरा मालूम हो और उस स्थान के बाल सफेद हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जो जले में से फूट पड़ा है। तब याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करना चाहिए। यह भयंकर चर्म रोग है। 26किन्तु याजक यदि उस स्थान को देखता है और सफेद दाग में सफेद बाल नहीं है और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि हल्का है तो याजक को उसे सात दिन के लिए ही अलग करना चाहिए। 27सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति को फिर देखना चाहिए। यदि दाग चर्म पर फैले तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह भयंकर चर्म रोग है।

28किन्तु यदि सफेद दाग चर्म पर न फैले, अपितु धुंधला हो तो यह जलने से पैदा हुई सूजन है। याजक को उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित करना चाहिए। यह केवल जले का निशान है। 29किसी व्यक्ति के सिर की खाल पर या दाढ़ी में कोई छूत रोग हो सकता है। 30याजक को छूत के रोग को देखना चाहिए। यदि छूत का रोग चर्म से गहरा मालूम हो और इसके चारों ओर के बाल बारीक और पीले हों तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह बुरा चर्मरोग है। 31यदि रोग चर्म से गहरा न मालूम हो, और इसमें कोई काला बाल न हो तो याजक को उसे सात दिन के लिए अलग कर देना चाहिए। 32सातवें दिन याजक को छूत के रोगी को देखना चाहिए। यदि रोग फैला नहीं है या इसमें पीले बाल नहीं उग रहे हैं और रोग चर्म से गहरा नहीं है, 33तो व्यक्ति को बाल काट लेने चाहिए। किन्तु उसे रोग वाले स्थान के बाल नहीं काटने चाहिए। याजक को उस व्यक्ति को और सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। 34सातवें दिन याजक को रोगी को देखना

चाहिए। यदि रोग चर्म में नहीं फैला है और यह चर्म से गहरा नहीं मालूम होता है तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए तथा शुद्ध हो जाना चाहिए। 35किन्तु यदि व्यक्ति के शुद्ध हो जाने के बाद चर्म में रोग फैलता है 36तो याजक को फिर व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि रोग चर्म में फैला है तो याजक को पीले बालों को देखने की आवश्यकता नहीं है, व्यक्ति अशुद्ध है। 37किन्तु यदि याजक यह समझता है कि रोग का बढ़ना रुक गया है और इसमें काले बाल उग रहे हैं तो रोग अच्छा हो गया है। व्यक्ति शुद्ध है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

38"जब व्यक्ति के चर्म पर सफेद दाग हों, 39तो याजक को उन दागों को देखना चाहिए। यदि व्यक्ति के चर्म के दाग धुंधले सफेद हैं, तो रोग केवल अहानिकारक फुंसियाँ हैं। वह व्यक्ति शुद्ध है।

40"किसी व्यक्ति के सिर के बाल झड़ सकते हैं। वह शुद्ध है। यह केवल गंजापन है। 41किसी आदमी के सिर के माथे के बाल झड़ सकते हैं। वह शुद्ध है। यह दूसरे प्रकार का गंजापन है। 42किन्तु यदि उसके सिर की चमड़ी पर लाल सफेद फुंसियाँ हैं तो यह भयानक चर्म रोग है। 43याजक को ऐसे व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि छूत प्रस्त त्वचा की सूजन लाली युक्त सफेद है और कुष्ठ की तरह शरीर के अन्य भागों पर दिखाई पड़ रही है 44तो उस व्यक्ति के सिर की चमड़ी पर भयानक चर्मरोग है। व्यक्ति अशुद्ध है, याजक को घोषणा करनी चाहिए। 45यदि किसी व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हो तो उस व्यक्ति को अन्य लोगों को सावधान करना चाहिए। उस व्यक्ति को जोर से 'अशुद्ध! अशुद्ध!' कहना चाहिए, उस व्यक्ति के वस्त्रों को, सिलाई से फाड़ देना चाहिए। उस व्यक्ति को अपने बालों को सँवारना नहीं चाहिए और उस व्यक्ति को अपना मुख ढकना चाहिए। 46जो व्यक्ति अशुद्ध होगा उसमें छूत का रोग सदा रहेगा। वह व्यक्ति अशुद्ध है। उसे अकेले रहना चाहिए। उनका निवास डेरे से बाहर होना चाहिए।

47-48"कुछ वस्त्रों पर फफूँदी लग सकती हैं। वस्त्र सन का या ऊनी हो सकता है। वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ हो सकता है। फफूँदी किसी चमड़े या चमड़े से बनी किसी चीज पर हो सकती है। 49यदि फफूँदी हरी या लाल हो तो उसे याजक को दिखाना चाहिए। 50याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। उसे उस चीज को सात दिन तक अलग स्थान पर रखना चाहिए। 51-52सातवें दिन, याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि फफूँदी चमड़े या कपड़े पर है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि चमड़े का उपयोग किस लिए किया गया था। यदि फफूँदी फैलती है तो वह कपड़ा या चमड़ा अशुद्ध

है। वह फफूँदी अशुद्ध है। याजक को उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

53“यदि याजक देखे कि फफूँदी फैली नहीं तो वह कपड़ा या चमड़ा धोया जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि यह चमड़ा है या कपड़ा, अथवा कपड़ा बुना हुआ है या कड़ा हुआ, इसे धोना चाहिए। 54याजक को लोगों को यह आदेश देना चाहिए कि वे चमड़े या कपड़े के टुकड़ों को धोएं, तब याजक वस्त्रों को और सात दिनों के लिए अलग करे। 55उस समय के बाद याजक को फिर देखना चाहिए। यदि फफूँदी ठीक वैसी ही दिखाई देती है तो वह वस्तु अशुद्ध है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि छूल फैली नहीं है। तुम्हें उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

56 “किन्तु यदि याजक उस चमड़े या कपड़े को देखता है कि फफूँदी मुरझा गई है तो याजक को चमड़े या कपड़े के फफूँदी युक्त दाग को चमड़े या कपड़े से फाड़ देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि कपड़ा कड़ा हुआ है या बारीक बुना हुआ है। 57किन्तु फफूँदी उस चमड़े या कपड़े पर लौट सकती है। यदि ऐसा होता है तो फफूँदी बढ़ रही है। उस चमड़े या कपड़े को जला देना चाहिए। 58किन्तु यदि धोने के बाद फफूँदी न लौटे, तो वह चमड़ा या कपड़ा शुद्ध है। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कड़ा हुआ या बुना हुआ था। वह कपड़ा शुद्ध है।” 59चमड़े या कपड़े पर की फफूँदी के विषय में ये नियम हैं। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कड़ा हुआ है या बुना हुआ है।

भयानक चर्म रोगी को शुद्ध करने के नियम

14 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“ये उन लोगों के लिए नियम हैं जिन्हें भयानक चर्म रोग था और जो स्वस्थ हो गए। ये नियम उस व्यक्ति को शुद्ध बनाने के लिए हैं।

“याजक को उस व्यक्ति को देखना चाहिए जिसे भयानक चर्म रोग है। याजक को उस व्यक्ति के पास डेरों के बाहर जाना चाहिए। याजक को यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि वह चर्म रोग अच्छा हो गया है। यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो याजक उसे यह करने को कहेगा: उसे दो जीवित शुद्ध पक्षी, एक देवदारु की लकड़ी, लाल कपड़े का एक टुकड़ा और एक जूफा का पौधा लाना चाहिए। याजक को बहते हुए पानी के ऊपर मिट्टी के एक कटोरे में एक पक्षी को मारने का आदेश देना चाहिए। 6तब याजक दूसरे पक्षी को ले, जो अभी जीवित है और देवदारु की लकड़ी, लाल कपड़े के टुकड़े और जूफा का पौधा ले। याजक को जीवित पक्षी और अन्य चीजों को बहते हुए पानी के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में डुबाना चाहिए। 7याजक उस व्यक्ति पर सात बार खून छिड़केगा जिसे भयानक चर्म रोग है।

तब याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। तब याजक को खुले मैदान में जाना चाहिए और जीवित पक्षी को उड़ा देना चाहिए।

8“इसके बाद उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। तब वह व्यक्ति डेरों में जा सकेगा। किन्तु उसे अपने खेमे के बाहर सात दिन तक रहना चाहिए। 9सातवें दिन उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए। उसे अपने सिर, दाढ़ी, भौंहों के सभी बाल कटवा लेने चाहिए। तब उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। तब वह व्यक्ति शुद्ध होगा।

10“आठवें दिन उस व्यक्ति को दो नर मेमने लेने चाहिए जिनमें कोई दोष न हो। उसे एक वर्ष की एक मादा मेमना भी लेनी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे छः क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के लिए है। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट* जैतून का तेल लेना चाहिए। 11याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। याजक को उस व्यक्ति और उसकी बलि को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाना चाहिए। 12याजक नर मेमनों में से एक को दोषबलि के रूप में चढ़ाएगा। वह उस मेमनों और उस तेल को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में चढ़ाएगा। 13तब याजक नर मेमने को उसी पवित्र स्थान पर मारेगा जहाँ वे पापबलि और होमबलि को मारते हैं। दोषबलि, पापबलि के समान है। यह याजक की है। यह अत्यन्त पवित्र है।

14“याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा और फिर याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिर पर लगाएगा। याजक कुछ खून उस व्यक्ति के हाथ के दाएँ अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। 15याजक कुछ तेल भी लेगा और अपनी बाँधी हथेली पर डालेगा। 16तब याजक अपने दाएँ हाथ की उँगलियाँ अपने बाएँ हाथ की हथेली में रखे हुये तेल में डुबाएगा। वह अपनी उँगली का उपयोग कुछ तेल यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। 17याजक अपनी हथेली का कुछ तेल शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिर पर लगाएगा। याजक कुछ तेल उस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल दोषबलि के खून पर लगाएगा। * 18याजक अपनी हथेली में बचा हुआ तेल शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर

छः क्वार्ट 3/10 एम।

दो तिहाई पिन्ट “एक लोज।”

याजक ... लगाएगा अर्थात् तेल उस खून के ऊपर लगाया जाता है जो व्यक्ति के कान, अंगूठे और पैर के अंगूठे पर लगा था।

पर लगाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पाप का यहोवा के सामने भुगतान करेगा।

19^{१९} उसके बाद याजक पापबलि चढ़ाएगा और व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा जिससे वह शुद्ध हो जाएगा। इसके पश्चात याजक होमबलि के लिए जानवर को मारेगा। 20^{२०} तब याजक होमबलि और अन्नबलि को वेदी पर चढ़ाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जायेगा।

21^{२१} किन्तु यदि व्यक्ति गरीब है और उन बलियों को देने में असमर्थ है तो उसे एक मेमना दोषबलि के रूप में लेना चाहिए। यह उत्तोलनबलि होगी जिससे याजक उसके पापों के भुगतान के लिए देगा। उसे दो क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के रूप में उपयोग में आएगा। व्यक्ति को दो तिहाई पिट्ट जैतून का तेल 22^{२२} और दो फ़ाख़ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। इन चीज़ों को देने में गरीब लोग भी समर्थ होंगे। एक पक्षी पापबलि के लिए होगा और दूसरा होमबलि का होगा।

23^{२३} आठवें दिन, वह व्यक्ति उन चीज़ों को याजक के पास मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। वे चीज़ें यहोवा के सामने बलि चढ़ाई जाएंगी जिससे व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा। 24^{२४} याजक, दोषबलि के रूप में तेल और मेमना को लेगा तथा यहोवा के सामने उत्तोलनबलि के रूप में चढ़ाएगा। 25^{२५} तब याजक दोषबलि के मेमने को मारेगा। याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा। याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक इसमें से कुछ खून इस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। 26^{२६} याजक इस तेल में से कुछ अपनी बायीं हथेली में भी डालेगा। 27^{२७} याजक अपने दाएँ हाथ की उँगली का उपयोग अपनी हथेली के तेल को यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। 28^{२८} तब याजक अपनी हथेली के कुछ तेल को शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के सिरे पर लगाएगा। याजक इस तेल में से कुछ तेल व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और उसके दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक दोषबलि के खून लगे स्थान पर इसमें से कुछ तेल लगाएगा। 29^{२९} याजक को अपनी हथेली के बचे हुये तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर डालना चाहिए। इस प्रकार यहोवा के सामने याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा।

30^{३०} तब व्यक्ति फ़ाख़तों में से एक या कबूतर के बच्चों में से एक की बलि चढ़ाएगा। गरीब लोग भी इन पक्षियों को भेंट करने में समर्थ होंगे। 31^{३१} व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार बलि चढ़ानी चाहिए। उसे पक्षियों में

से एक को पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए और दूसरे पक्षी को होमबलि के रूप में उसे उनको अन्नबलि के साथ भेंट चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार याजक यहोवा के सामने उस व्यक्ति के पाप का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा।

32^{३२} ये भयानक चर्मरोग के ठीक होने के बाद किसी एक व्यक्ति को शुद्ध करने के नियम हैं। ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो शुद्ध होने के लिए सामान्य बलियों का व्यय नहीं उठा सकते।

घर में लगी फफूँदी के लिए नियम

33^{३३} यहोवा ने मूसा और हारून से यह भी कहा, 34^{३४} मैं तुम्हारे लोगों को कनान देश दे रहा हूँ। तुम्हारे लोग इस भूमि पर जाएंगे। उस समय मैं हो सकता है, कुछ लोगों के घरों में फफूँदी लगे हों। 35^{३५} तो उस घर के मालिक को याजक के पास आकर कहना चाहिए, 'मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।'

36^{३६} तब याजक को आदेश देना चाहिए कि घर को खाली कर दिया जाय। लोगों को याजक के फफूँदी देखने जाने से पहले ही यह करना चाहिए। इस तरह घर की सभी चीज़ों को याजक को अशुद्ध नहीं कहना पड़ेगा। लोगों द्वारा घर खाली कर दिए जाने पर याजक घर में देखने जाएगा। 37^{३७} याजक फफूँदी को देखेगा। यदि फफूँदी ने घर की दीवारों पर हरे या लाल रंग के चकत्ते बना दिए हैं और फफूँदी दीवार की सतह पर बढ रही है, 38^{३८} तो याजक को घर से बाहर निकल आना चाहिए और सात दिन तक घर बन्द कर देना चाहिए।

39^{३९} सातवें दिन, याजक को वहाँ लौटना चाहिए और घर की जाँच करनी चाहिए। यदि घर की दीवारों पर फफूँदी फैल गई हो 40^{४०} तो याजक को लोगों को आदेश देना चाहिए कि वे फफूँदी सहित पत्थरों को उखाड़ें और उन्हें दूर फेंक दें। उन्हें उन पत्थरों को नगर से बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर फेंकना चाहिए। 41^{४१} तब याजक को पूरे घर को अन्दर से खुरचवा डालना चाहिए। लोगों को उस लेप को जिसे उन्होंने खुरचा है, फेंक देना चाहिए। उन्हें उस लेप को नगर के बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर डालना चाहिए। 42^{४२} तब उस व्यक्ति को नए पत्थर दीवारों में लगाने चाहिए और उसे उन दीवारों को नए लेप से ढक देना चाहिए।

43^{४३} सम्भव है कोई व्यक्ति पुराने पत्थरों और लेप को निकाल कर नये पत्थरों और लेप को लगाए और सम्भव है वह फफूँदी उस घर में फिर प्रकट हो। 44^{४४} तब याजक को आकर उस घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में फैल गई है तो यह रोग है जो दूसरी जगहों में जल्दी से फैलता है। अतः घर अशुद्ध है। 45^{४५} उस व्यक्ति को वह घर गिरा देना चाहिए। उन्हें सारे पत्थर, लेप तथा अन्य लकड़ी के टुकड़ों को नगर से बाहर

दो क्वार्ट "1/10 एगल"

अशुद्ध स्थान पर ले जाना चाहिए 46 और कोई व्यक्ति जो उसमें जाता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 47 यदि कोई व्यक्ति उसमें भोजन करता है या उसमें सोता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए।

48 "घर में नये पत्थर और लेप लगाने के बाद याजक को घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में नहीं फैली है तो याजक घोषणा करेगा कि घर शुद्ध है। क्यों? क्योंकि फफूँदी समाप्त हो गई है।

49 "तब, घर को शुद्ध करने के लिए याजक को दो पक्षी, एक देवदारु की लकड़ी, एक लाल कपड़े का टुकड़ा और जूफा का पौधा लेना चाहिए। 50 याजक बहते पानी के ऊपर मिट्टी के कटोरे में एक पक्षी को मारेगा। 51 तब याजक देवदारु की लकड़ी, जूफा का पौधा, लाल कपड़े का टुकड़ा और जीवित पक्षी को लेगा। याजक बहते जल के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में उन चीजों को डुबाएगा। तब याजक उस खून को उस घर पर सात बार छिड़केगा। 52 इस प्रकार याजक उन चीजों का उपयोग घर को शुद्ध करने के लिए करेगा। 53 याजक खुले मैदान में नगर के बाहर जाएगा और पक्षी को उड़ा देगा। इस प्रकार याजक घर को शुद्ध करेगा। घर शुद्ध हो जाएगा।"

54 वे नियम भयानक चर्मरोग के, 55 घर या कपड़े के टुकड़ों पर की फफूँदी के बारे में है। 56 वे नियम सूजन, फुंसियों या चर्मरोग पर सफेद दाग से सम्बन्धित हैं। 57 वे नियम सिखाते हैं कि चीजे कब अशुद्ध हैं तथा कब शुद्ध हैं। वे नियम उस प्रकार की बिमारियों से सम्बन्धित हैं।

शरीर से बहने वाले प्रावों के नियम

15 यहेवा ने मूसा और हारून से कहा, 2 "इज़्राएल के लोगों से कहो: जब किसी व्यक्ति के शरीर से धात का प्राव होता है तब वह व्यक्ति अशुद्ध होता है। 3 वह धात शरीर से खुला बहता है या शरीर उसे बहने से रोक देता है इसका कोई महत्व नहीं।

4 "यदि धात त्याग करने वाला बिस्तर पर सोया रहता है तो वह बिस्तर अशुद्ध हो जाता है। जिस चीज़ पर भी वह बैठता है वह अशुद्ध हो जाती है। 5 यदि कोई व्यक्ति उसके बिस्तर को छूता भी है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना और पानी से नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 6 यदि कोई व्यक्ति उस चीज़ पर बैठता है जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो उसे अपने वस्त्र धोना और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 7 यदि कोई व्यक्ति उस व्यक्ति को छूता है जिसने धात त्याग किया है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

8 "यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति किसी शुद्ध व्यक्ति पर थूकता है तो शुद्ध व्यक्ति को अपने वस्त्र

धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 9 पशु पर बैठने की कोई काठी जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो वह अशुद्ध हो जाएगा। 10 इसलिए कोई व्यक्ति जो धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे रहने वाली किसी चीज़ को छूता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे की चीज़ें ले जाता है उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

11 "यह सम्भव है कि धात त्याग करने वाला व्यक्ति पानी में हाथ धोए बिना किसी अन्य व्यक्ति को छूए। तब दूसरा व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोए और बहते पानी में नहाए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

12 "धात त्याग करने वाला व्यक्ति यदि मिट्टी का कटोरा छूए तो वह कटोरा फोड़ देना चाहिए। यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति कोई लकड़ी का कटोरा छूए तो उस कटोरे को बहते पानी में अच्छी तरह धोना चाहिए। 13 जब धात त्याग करने वाला कोई व्यक्ति अपने धात त्याग से शुद्ध किया जाता है तो उसे अपनी शुद्धि के लिए उस दिन से सात दिन गिनने चाहिए। तब उसे अपने वस्त्र धोने चाहिए और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। 14 आठवें दिन उस व्यक्ति को दो फ़ाख़ो या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहेवा के सामने आना चाहिए। वह व्यक्ति दो पक्षी याजक को देगा। 15 याजक पक्षियों की बलि चढ़ाएगा। एक को पापबलि के लिए तथा दूसरे को होमबलि के लिये। इस प्रकार याजक इस व्यक्ति को यहेवा के सामने उस के धात त्याग से हुई अशुद्धता से शुद्ध करेगा।

पुरुषों के लिये नियम

16 "यदि व्यक्ति का वीर्य निकल जाता है तो उसे सम्पूर्ण शरीर से बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 17 यदि वीर्य किसी वस्त्र या चमड़े पर गिरे तो वह वस्त्र या चमड़ा पानी में धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 18 यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ सोता है और वीर्य निकलता है तो स्त्री पुरुष दोनों को बहते पानी में नहाना चाहिए। वे सन्ध्या तक अशुद्ध रहेंगे।

स्त्रियों के लिये नियम

19 "यदि कोई स्त्री मासिक रक्त प्राव के समय मासिकधर्म से है तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यदि कोई व्यक्ति उसे छूता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 20 अपने मासिकधर्म के समय स्त्री जिस किसी चीज़ पर लेटेगी, वह भी अशुद्ध होगी और उस समय में जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह भी अशुद्ध होगी।

21 यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री के बिस्तर को छूता है तो उसे अपने वस्त्रों को बहते पानी में धोना और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 22 यदि कोई व्यक्ति उस चीज़ को छूता है जिस पर वह स्त्री बैठी हो तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र बहते पानी में धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 23 वह व्यक्ति स्त्री के बिस्तर को छूता है या उस चीज़ को छूता है जिस पर वह बैठी हो, तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 24 यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिक धर्म के समय यौन सम्बन्ध करता है तो वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। हर एक बिस्तर जिस पर वह सोता है, अशुद्ध होगा।

25 यदि किसी स्त्री को कई दिन तक रक्त स्राव रहता है जो उसके मासिकधर्म के समय नहीं होता, या निश्चित समय के बाद मासिकधर्म होता है तो वह उसी प्रकार अशुद्ध होगी जिस प्रकार मासिकधर्म के समय और तब तक अशुद्ध रहेगी जब तक रहेगा। 26 पूरे रक्त स्राव के समय वह स्त्री जिस बिस्तर पर लेटेगी, वह वैसा ही होगा जैसा मासिकधर्म के समय। जिस किसी चीज़ पर वह स्त्री बैठेगी, वह वैसा ही अशुद्ध होगी जैसे वह मासिकधर्म से अशुद्ध होती है। 27 यदि कोई व्यक्ति उन चीज़ों को छूता है तो वह अशुद्ध होगा। इस व्यक्ति को बहते पानी से अपने कपड़े धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28 उसके बाद जब स्त्री अपने मासिकधर्म से अशुद्ध हो जाती है तब से उसे सात दिन गिनने चाहिए। इसके बाद वह शुद्ध होगी। 29 फिर आठवें दिन उसे दो फ़ाख़ते और दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाना चाहिए। 30 तब याजक को एक पक्षी पापबलि के रूप में तथा दूसरे को होमबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह याजक उसे यहोवा के सामने उसके स्राव से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध करेगा।

31 इसलिये तुम इम्राएल के लोगों को अशुद्ध होने और उनको अशुद्धि से दूर रहने के बारे में सावधान करना। यदि तुम लोगों को सावधान नहीं करते तो वे मेरे पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकते हैं और तब उन्हें मरना होगा।"

32 ये नियम धात त्याग करने वाले लोगों के लिए हैं। ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो वीर्य के शरीर से बाहर निकलने से अशुद्ध होते हैं 33 और ये नियम उन स्त्रियों के लिए हैं जो अपने मासिकधर्म के रक्त स्राव के समय अशुद्ध होती हैं और वे नियम उन पुरुषों के लिए हैं जो अशुद्ध स्त्रियों के साथ सोने से अशुद्ध होते हैं।

पाप से निस्तार का दिन

16 हासून के दो पुत्र यहोवा को सुगन्ध भेंट चढ़ते समय मर गए थे। फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

2 "अपने भाई हासून से बात करो कि वह जब चाहे तब पर्दे के पीछे महापवित्र स्थान में नहीं जा सकता है। उस पर्दे के पीछे जो कमरा है उसमें पवित्र सन्दूक रखा है। उस पवित्र सन्दूक के ऊपर उसका विशेष ढक्कन लगा है। उस विशेष ढक्कन के ऊपर एक बादल में मैं प्रकट होता हूँ। यदि हासून उस कमरे में जाता है तो वह मर जायेगा।

3 "पाप से निस्तार के दिन पवित्र स्थान में जाने के पहले हासून को पापबलि के रूप में एक बछड़ा और होमबलि के लिए एक मेढ़ा भेंट करना चाहिए। 4 हासून अपने पूरे शरीर को पानी डालकर धोएगा। तब हासून इन वस्त्रों को पहनेगा: हासून पवित्र सन के वस्त्र पहनेगा। सन के निचले वस्त्र शरीर से सटे होंगे। उसकी पेटी सन का पटुका होगी। हासून सन की पगड़ी बांधेगा। ये पवित्र वस्त्र हैं।

5 "हासून को इम्राएल के लोगों से दो बकरे पापबलि के रूप में और एक मेढ़ा होमबलि के लिए लेना चाहिए। 6 तब हासून बैल की पापबलि चढ़ाएगा। यह पापबलि उसके अपने लिए और उसके परिवार के लिए है। तब हासून वह उपासना करेगा जिसमें वह और उसका परिवार शुद्ध होंगे।

7 "इसके बाद हासून दो बकरे लेगा और मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाएगा। 8 हासून दोनों बकरों के लिए चिट्ठी डालेगा। एक चिट्ठी यहोवा के लिए होगी। दूसरी चिट्ठी अजाजेल के लिए होगी। 9 "तब हासून चिट्ठी डालकर यहोवा के लिए चुने गए बकरे की भेंट चढ़ाएगा। हासून को इस बकरे को पापबलि के लिये चढ़ाना चाहिए। 10 किन्तु चिट्ठी डालकर अजाजेल के लिए चुना गया बकरा यहोवा के सामने जीवित लाया जाना चाहिए। याजक उसे शुद्ध बनाने के लिये उपासना करेगा। तब यह बकरा मरुभूमि में अजाजेल के पास भेजा जाएगा।

11 "तब हासून अपने लिए बैल को पापबलि के रूप में चढ़ाएगा। हासून अपने आप को और अपने परिवार को शुद्ध करेगा। हासून बैल को अपने लिए पापबलि के रूप में मारेगा। 12 तब उसे आग के लिए एक तसला वेदी के अंगारों से भरा हुआ यहोवा के सामने लाना चाहिए। हासून दो मुट्ठी वह मधुर सुगन्धित धूप लेगा जो बारीक पीसी गई है। हासून को पर्दे के पीछे कमरे में उस सुगन्धि को लाना चाहिए। 13 हासून को यहोवा के सामने सुगन्धि को आग में डालना चाहिए। तब सुगन्धित धूप के धुएँ का बादल साक्षीपत्र के ऊपर के विशेष ढक्कन को ढक लेगा। इस प्रकार हासून नहीं मरेगा। 14 साथ ही साथ हासून को बैल का कुछ खून लेना चाहिए और उसे अपनी उँगली से उस विशेष ढक्कन के पूर्व की ओर छिड़कना चाहिए। इस के सामने वह अपनी उँगली से सात बार खून छिड़केगा।

15"तब हारून को लोगों के लिए पापबलि स्वरूप बकरे को मारना चाहिए। हारून को बकरे का खून पर्दे के पीछे कमरे में लाना चाहिए। हारून को बकरे के खून से वैसा ही करना चाहिए जैसा बैल के खून से उसने किया। हारून को उस ढक्कन पर और ढक्कन के सामने बकरे का खून छिड़कना चाहिए। 16"ऐसा अनेक बार हुआ जब इज़्राएल के लोग अशुद्ध हुए। इसलिए हारून इज़्राएल के लोगों के अपराध और पाप से महापवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए उपासना करेगा। हारून को ये काम क्यों करना चाहिए? क्योंकि मिलापवाला तम्बू अशुद्ध लोगों के बीच में स्थित है। 17"जिस समय हारून महापवित्र स्थान को शुद्ध करे, उस समय कोई व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में नहीं होना चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके भीतर तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक हारून बाहर न आ जाय। इस प्रकार, हारून अपने को और अपने परिवार को शुद्ध करेगा और तब इज़्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करेगा। 18"तब हारून उस वेदी पर जाएगा जो यहोवा के सामने है। हारून वेदी को शुद्ध करेगा। हारून बैल का कुछ खून और कुछ बकरे का खून लेकर वेदी के कोनों पर चारों ओर लगाएगा। 19"तब हारून कुछ खून अपनी उँगली से वेदी पर सात बार छिड़केगा। इस प्रकार हारून इज़्राएल के लोगों के सभी पापों से वेदी को शुद्ध और पवित्र करेगा।

20"हारून महापवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू तथा वेदी को पवित्र बनाएगा। इन कामों के बाद हारून यहोवा के पास बकरे को जीवित लाएगा। 21"हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे के सिर पर रखेगा। तब हारून बकरे के ऊपर इज़्राएल के लोगों के अपराध और पाप को कबूल करेगा। इस प्रकार हारून लोगों के पापों को बकरे के सिर पर डालेगा। तब वह बकरे को दूर मरुभूमि में भेजेगा। एक व्यक्ति बगल में बकरे को ले जाने के लिए खड़ा रहेगा। 22"इस प्रकार बकरा सभी लोगों के पाप अपने ऊपर सूनी मरुभूमि में ले जाएगा। जो व्यक्ति बकरे को ले जाएगा वह मरुभूमि में उसे खुला छोड़ देगा।

23"तब हारून मिलापवाले तम्बू में जाएगा। वह सन के उन वस्त्रों को उतारेगा जिन्हें उसने महापवित्र स्थान में जाते समय पहना था। उसे उन वस्त्रों को वहीं छोड़ना चाहिए। 24"वह अपने पूरे शरीर को पवित्र स्थान में पानी डालकर धोएगा। तब वह अपने अन्य विशेष वस्त्रों को पहनेगा। वह बाहर आएगा और अपने लिये होमबलि और लोगों के लिये होमबलि चढ़ाएगा। वह अपने को तथा लोगों को पापों से मुक्त करेगा। 25"तब वह वेदी पर पापबलि की चर्बी को जलाएगा। 26"जो व्यक्ति बकरे को अजाजेल के पास ले जाए, उसे अपने वस्त्र तथा अपने पूरे शरीर को पानी

डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता है।

27"पापबलि के बैल और बकरे को डेरे के बाहर ले जाना चाहिए। उन जानवरों का खून पवित्र स्थान में पवित्र चीज़ों को शुद्ध करने के लिए लाया गया था। याजक उन जानवरों का चमड़ा, शरीर और शरीर मल आग में जलाएगा। 28"तब उन चीज़ों को जलाने वाले व्यक्ति को अपने वस्त्र और पूरे शरीर को पानी डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता है।

29"यह नियम तुम्हारे लिए सदैव रहेगा: सातवें महीने के दसवें दिन तुम्हें उपवास करना चाहिए। तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम्हारे साथ रहने वाले यात्री या विदेशी भी कोई काम नहीं कर सकेंगे। 30"क्यों? क्योंकि इस दिन याजक तुम्हें शुद्ध करता है और तुम्हारे पापों को धोता है। तब तुम यहोवा के लिए शुद्ध होंगे। 31"यह दिन तुम्हारे लिए आराम करने का विशेष दिन है। तुम्हें इस दिन उपवास करना चाहिए। यह नियम सदैव के लिए होगा।

32"सो वह पुरुष जो महायाजक बनने के लिए अभिषिक्त है, वस्तुओं को शुद्ध करने की उपासना को सम्पन्न करेगा। यह वही पुरुष है जिसे उसके पिता की मृत्यु के बाद महायाजक के रूप में सेवा के लिए नियुक्त किया गया है। उस याजक को सन के पवित्र वस्त्र धारण करने चाहिए। 33"उसे पवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू और वेदी को शुद्ध करना चाहिए और उसे याजक और इज़्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करना चाहिए। 34"इज़्राएल के लोगों को शुद्ध करने का यह नियम सदैव रहेगा। इज़्राएल के लोगों के पाप के निस्तार के लिए तुम उन क्रियाओं को वर्ष में एक बार करोगे।"

इसलिए उन्होंने वही किया जो यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

जानवरों को मारने और खाने के नियम

17 यहोवा ने मूसा से कहा, 1"हारून, उसके पुत्रों और इज़्राएल के सभी लोगों से कहो। उनको कहो कि यहोवा ने यह आदेश दिया है: 'कोई इज़्राएली व्यक्ति किसी बैल या मेमने या बकरे को डेरे में या डेरे के बाहर मार सकता है। 2"वह व्यक्ति उस जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। उसे उस जानवर का एक भाग यहोवा को भेंट के रूप में देना चाहिए। उस व्यक्ति ने खून बहाया है, मारा है इसलिए उसे यहोवा के पवित्र तम्बू में भेंट ले जानी चाहिए। यदि वह जानवर के भाग को भेंट के रूप में यहोवा को नहीं ले जाता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। 3"यह नियम इसलिए है कि लोग मेलबलि यहोवा को अर्पित करें। इज़्राएल के लोगों को उन जानवरों को

लाना चाहिए जिन्हें वे मैदानों में मारते हैं। उन्हें उन जानवरों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए। उन्हें उन जानवरों को याजक के पास लाना चाहिए। 6तब याजक उन जानवरों का खून मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप यहोवा की वेदी तक फेंकेगा और याजक उन जानवरों की चर्बी को वेदी पर जलाएगा। यह यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। 7उन्हें आगे अब कोई भी भेंट 'बकरे की मूर्तियों' को नहीं चढ़ानी चाहिए। ये लोग उन अन्य देवताओं के पीछे लग चुके हैं। इस प्रकार उन्होंने वेश्याओं जैसा काम किया है। ये नियम सदैव ही रहेंगे!

8"लोगों से कहो: इज़्राएल का कोई नागरिक, या कोई यात्री, या कोई विदेशी जो तुम लोगों के बीच रहता है, होमबलि या बलि चढ़ा सकता है। 9उस व्यक्ति को वह बलि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जानी चाहिए और उसे यहोवा को चढ़ानी चाहिए। यदि वह व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।

10"मैं (परमेश्वर) हर ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो खून खाता है। चाहे वह इज़्राएल का नागरिक हो या वह तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी हो। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। 11क्यों? क्योंकि प्राणी का जीवन खून में है। मैंने तुम्हें उस खून को वेदी पर डालने का नियम दिया है। तुम्हें अपने को शुद्ध करने के लिए यह करना चाहिए। तुम्हें वह खून उस जीवन के बदले में मुझे देना होगा जो तुम लेते हो। 12इसलिए मैं इज़्राएल के लोगों से कहता हूँ: तुममें से कोई खून नहीं खा सकता और न ही तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी खून खा सकता है। 13यदि कोई व्यक्ति किसी जंगली जानवर या पक्षी को पकड़ता है जिसे खाया जा सके तो उस व्यक्ति को खून जमीन पर बहा देना चाहिए और मिट्टी से उसे ढक देना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति इज़्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला विदेशी। 14तुम्हें यह क्यों करना चाहिए? क्योंकि यदि खून तब भी माँस में है तो उस जानवर का प्राण भी माँस में है। इसलिए मैं इज़्राएल के लोगों को आदेश देता हूँ: उस माँस को मत खाओ जिसमें खून हो! कोई भी व्यक्ति जो खून खाता है अपने लोगों से अलग कर दिया जाए।

15यदि कोई व्यक्ति अपने आप मरे जानवर या किसी दूसरे जानवर द्वारा मारे गए जानवर को खाता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को अपने वस्त्र और अपना पूरा शरीर पानी से धोना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति इज़्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी। 16यदि वह व्यक्ति अपने वस्त्रों को नहीं धोता और न ही नहाता है तो वह पाप करने का अपराधी होगा।"

यौन सम्बन्धों के बारे में नियम

18 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इज़्राएल के लोगों से कहो: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 3यहाँ आने के पहले तुम लोग मिश्र में थे। तुम्हें वह नहीं करना चाहिए जो वहाँ हुआ करता था! मैं तुम लोगों को कनान ले जा रहा हूँ। तुम लोगों को वह नहीं करना है जो उस देश में किया जाता है! 4तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए और मेरे नियमों के अनुसार चलना चाहिए। उन नियमों के पालन में सावधान रहो! क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

5इसलिए तुम्हें मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति मेरे विधियों और नियमों का पालन करता है तो वह जीवित रहेगा! मैं यहोवा हूँ!

6"तुम्हें अपने निकट सम्बन्धियों से कभी यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए! मैं यहोवा हूँ!

7"तुम्हें अपने पिता का अपमान नहीं करना चाहिए अर्थात् तुम्हें अपनी माता के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। 8तुम्हें अपनी विमाता से भी यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। पिता की पत्नी से यौन सम्बन्ध केवल तुम्हारे पिता के लिए है।

9"तुम्हें अपने पिता या माँ की पुत्री अर्थात् अपनी बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि तुम्हारी उस बहन का पालन पोषण तुम्हारे घर हुआ या किसी अन्य जगह।

10"तुम्हें अपने नाती पोटियों से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वे बच्चे तुम्हारे अंग हैं!*

11"यदि तुम्हारे पिता और उनकी पत्नी की कोई पुत्री है* तो वह तुम्हारी बहन है। तुम्हें उसके साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

12"अपने पिता की बहन के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। वह तुम्हारे पिता के गोत्र की है। 13तुम्हें अपनी माँ की बहन के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारी माँ के गोत्र की है।

14तुम्हें अपने पिता के भाई का अपमान नहीं करना चाहिये अर्थात् उसकी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध के लिए नहीं जाना चाहिए।

15"तुम्हें अपनी पुत्रवधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम्हें उसके साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

16"तुम्हें अपने भाई की वधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिये। यह अपने भाई के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

वे बच्चे तुम्हारे अंग है। शब्दिक "उनकी नगना तुम्हारी नगना है।"

यदि ... पुत्री है इसका तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं कि पिता की पत्नी आवश्यक रूप से व्यक्ति की माँ हो, किन्तु वह व्यक्ति और पिता की पुत्री भाई बहन हैं।

सम्बन्ध रखने जैसा होगा। केवल तुम्हारा भाई अपनी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध रख सकता है। *

17"तुम्हें किसी स्त्री और उसकी पुत्री के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए और तुम्हें इस स्त्री की पोती से यौन सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह पोती उस स्त्री के पुत्र की या पुत्री की बेटी है। उसकी पोतियाँ उसके गोत्र की हैं। उनके साथ यौन सम्बन्ध करना अनुचित है।

18"जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, तुम्हें उसकी बहन को दूसरी पत्नी नहीं बनाना चाहिए। यह बहनों को परस्पर शत्रु बना देगा। तुम्हें अपनी पत्नी की बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

19"तुम्हें किसी स्त्री के पास उसके मासिकधर्म के समय यौन सम्बन्ध के लिए नहीं जाना चाहिए। वह इस समय अशुद्ध है।

20"तुम्हें अपने पड़ोसी की पत्नी से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह तुम्हें केवल अशुद्ध बनाएगा!

21"तुम्हें अपने किसी बच्चे को आग द्वारा मोलेक को भेंट नहीं चढ़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यही दिखाते हो कि तुम अपने यहोवा के नाम का सम्मान नहीं करते! मैं यहोवा हूँ।

22"तुम्हें किसी पुरुष के साथ वैसा ही यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए जैसा किसी स्त्री के साथ किया जाता है। यह भयंकर पाप है!

23"किसी जानवर के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। यह केवल तुम्हें घिनौना बना देगा! स्त्री को भी किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह प्रकृति के विरुद्ध है!

24"इन अनुचित कामों में से किसी से अपने को अशुद्ध न करो! मैं उन जातियों को उनके देश से बाहर कर रहा हूँ और मैं उनकी धरती तुम को दे रहा हूँ! क्यों? क्योंकि वे लोग जैसे भयंकर पाप करते हैं! 25इसलिए वह देश अशुद्ध हो गया है! वह देश अब उन कामों से ऊब गया है और वह देश उसमें रहने वालों को बाहर निकाल फेंक रहा है! *

26"इसलिए तुम मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करोगे। तुम्हें उन में से कोई भयंकर पाप नहीं करना चाहिए। ये नियम इज़्राएल के नागरिकों और जो तुम्हारे बीच रहते हैं, उनके लिए हैं। 27जो लोग तुम से पहले वहाँ रहे उन्होंने वे सभी भयंकर काम किए। जिससे वह धरती गन्दी हो गयी। 28यदि तुम भी वही काम करोगे तो तुम धरती को गंदा बनाओगे। यह तुम लोगों को वैसी ही निकाल बाहर करेगी, जैसे तुमसे पहले रहने वाली जातियों को किया गया। 29यदि कोई व्यक्ति जैसे भयंकर

पाप करता है तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। 30अन्य लोगों ने उन भयंकर पापों को किया है। किन्तु मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। तुम्हें उन भयंकर पापों में से कोई भी नहीं करना चाहिए। उन भयंकर पापों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इज़्राएल परमेश्वर का है

19 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इज़्राएल के सभी लोगों से कहो: कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ मैं पवित्र हूँ! इसलिए तुम्हें पवित्र होना चाहिए! 3तुम में से हर एक व्यक्ति को अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए और मेरे विश्राम के विशेष दिनों को मानना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

4"मूर्तियों की उपासना मत करो। अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ धातु गला कर मत बनाओ। मैं तुम लोगों का परमेश्वर यहोवा हूँ!

5"जब तुम यहोवा को मेलबलि चढ़ाओ तो तुम उसे ऐसे चढ़ाओ कि तुम यहोवा द्वारा स्वीकार किए जा सको। 6तुम इसे चढ़ाने के दिन खा सकोगे और अगले दिन भी। किन्तु यदि बलि का कुछ भाग तीसरे दिन भी बच जाए तो उसे तुम्हें आग में जला देना चाहिए। 7किसी भी बलि को तीसरे दिन नहीं खाना चाहिए। यह अशुद्ध है। यह स्वीकार नहीं होगी। 8यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अपराधी होगा! क्यों? क्योंकि उसने यहोवा की पवित्र चीजों का सम्मान नहीं किया। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।

9"जब तुम कटनी के समय अपनी फ़सल काटो तो तुम सब ओर से खेत के कोनों तक मत काटो और यदि अन्न जमीन पर गिर जाता है तो तुम्हें उसे इकट्ठा नहीं करना चाहिए। 10अपने अँगूर के बाग के सारे अँगूर न तोड़ो और जो जमीन पर गिर जाएँ उन्हें न उठाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हें वे चीजें गरीब लोगों और जो तुम्हारे देश से यात्रा करेंगे, उनके लिए छोड़नी चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

11"तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें लोगों को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें आपस में झूठ नहीं बोलना चाहिए। 12तुम्हें मेरे नाम पर झूठा वचन नहीं देना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने परमेश्वर के नाम का सम्मान नहीं करते हो। मैं यहोवा हूँ!

13"तुम्हें अपने पड़ोसी को धोखा नहीं देना चाहिए। तुम्हें उसकी चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें मजदूर की मजदूरी पूरी रात, सवेरे तक नहीं रोकनी चाहिए। *

तुम्हारा भाई ... है "वह तुम्हारे भाई की नग्नता है।"
निकाल फेंक रहा है उल्टी कर रहा है।

तुम्हें मजदूर ... रोकनी चाहिये इससे यह पता चलता है कि मजदूरी पर रखे गए मजदूर को उस दिन किए गए काम की मजदूरी उसी दिन दी जाती थी।

14"तुम्हें किसी बहरे आदमी को अपशब्द नहीं कहना चाहिए। तुम्हें किसी अन्धे को गिराने के लिए उसके सामने कोई चीज़ नहीं रखनी चाहिए। किन्तु तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ।

15"तुम्हें न्याय करने में ईमानदार होना चाहिए। न तो तुम्हें गरीब के साथ विशेष पक्षपात करना चाहिए और न ही बड़े एवं धनी लोगों के प्रति कोई आदर दिखाना चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी के साथ न्याय करते समय ईमानदार होना चाहिए। 16"तुम्हें अन्य लोगों के विरुद्ध चारों ओर अफवाहों फैलाते हुए नहीं चलना चाहिए। ऐसा कुछ न करो जो तुम्हारे पड़ोसी के जीवन को ख़तरों में डाले। मैं यहोवा हूँ।

17"तुम्हें अपने हृदय में अपने भाईयों से घृणा नहीं करनी चाहिए। यदि तुम्हारा पड़ोसी कुछ बुरा करता है तो इसके बारे में उसे समझाओ। किन्तु उसे क्षमा करो! 18"लोग, जो तुम्हारा बुरा करें, उसे भूल जाओ। उससे बदला लेने का प्रयत्न न करो। अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो। मैं यहोवा हूँ।

19"तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। दो जातियों के पशुओं को प्रजनन के लिए आपस में मत मिलाओ। तुम्हें खेत में दो प्रकार के बीज नहीं बोने चाहिए। तुम्हें दो प्रकार की चीज़ों के मिलावट से बने वस्त्रों को नहीं पहनना चाहिए।

20"यह हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की दासी से किसी व्यक्ति का यौन सम्बन्ध हो। यदि यह दासी न तो खरीदी गई है न ही स्वतन्त्र कराई गई है तो उन्हें दण्ड दिया जाना चाहिए। किन्तु वे मारे नहीं जाएंगे। क्यों? क्योंकि स्त्री स्वतन्त्र नहीं थी। 21"उस व्यक्ति को अपने अपराध के लिए मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए। व्यक्ति को एक मेढ़ा दोषबलि के रूप में लाना चाहिए। 22"याजक उस व्यक्ति के पापों के भुगतान करने के लिए उपासना करेगा। याजक यहोवा को दोषबलि के रूप में मेढ़े को चढ़ाएगा। यह व्यक्ति के किए हुए पापों के लिए होगा। तब व्यक्ति अपने किए पाप के लिए क्षमा किया जाएगा।

23"भविष्य में तुम अपने प्रदेश में प्रवेश करोगे। उस समय भोजन के लिए तुम अनेकों प्रकार के पेड़ लगाओगे। पेड़ लगाने के बाद पेड़ के किसी फल का उपयोग करने के लिए तुम्हें तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हें उससे पहले के फल का उपयोग नहीं करना चाहिए। 24"चौथे वर्ष उस पेड़ के फल यहोवा के होंगे। यह यहोवा की स्तुति के लिए पवित्र भेंट होगी। 25"तब, पाँचवें वर्ष तुम उस पेड़ का फल खा सकते हो और पेड़ तुम्हारे लिए अधिक से अधिक फल पैदा करेगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

26"तुम्हें कोई चीज़, उसमें खून रहते तक नहीं खानी चाहिए। तुम्हें भविष्यवाणी करने के लिये जादू या शगुन आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

27"तुम्हें अपने सिर के बगल के बड़े बालों को कटवाना नहीं चाहिए। तुम्हें अपनी दाढ़ी के किनारे नहीं कटवाने चाहिए। 28"किसी मरे व्यक्ति की याद को बनाए रखने के लिए तुम्हें अपने शरीर को काटना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने ऊपर कोई चिन्ह गुदवाना नहीं चाहिए। मैं यहोवा हूँ।

29"तुम अपनी पुत्री को वेश्या मत बनने दो। इससे केवल यह पता चलता है कि तुम उसका आदर नहीं करते। तुम अपने देश में स्त्रियों को वेश्याएँ मत बनने दो। तुम अपने देश को इस प्रकार के पापों से मत भर जाने दो।

30"तुम्हें मेरे विश्राम के विशेष दिनों में काम नहीं करना चाहिए। तुम्हें मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ।" 31"ओझाओं तथा भूतसिद्धियों के पास सलाह के लिए मत जाओ। उनके पास तुम मत जाओ, वे केवल तुम्हें अशुद्ध बनाएँगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

32"बूढ़े लोगोका सम्मान करो। जब वे कमरे में आएँ तो खड़े हो जाओ। अपने परमेश्वर का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ।"

33"अपने देश में रहने वाले विदेशियों के साथ बुरा व्यवहार मत करो! 34"तुम्हें विदेशियों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा तुम अपने नागरिकों के साथ करते हो। तुम विदेशियों से वैसा प्यार करो जैसा अपने से करते हो। क्यों? क्योंकि तुम भी एक समय मिश्र में विदेशी थे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 35"तुम्हें न्याय करते समय लोगों के प्रति ईमानदार होना चाहिए। तुम्हें चीज़ों के मापने और तौलने में ईमानदार होना चाहिए। 36"तुम्हारी टोकरीयाँ ठीक माप की होनी चाहिए। तुम्हारे नापने के पात्रों में द्रव की उचित मात्रा आनी चाहिए। तुम्हारे तराजू और तुम्हारे बाट चीज़ों को ठीक तौलने वाले होने चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिश्र देश से बाहर लाया। 37"तुम्हें मेरे सभी नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिए और तुम्हें उनका पालन करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ।"

मूर्ति पूजा के विरुद्ध चेतावनी

20 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"तुम्हें इज़्राएल के लोगों से यह भी कहना चाहिए: तुम्हारे देश में कोई व्यक्ति अपने बच्चों में से किसी को झूठे देवता मोलेक को दे सकता है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह इज़्राएल का नागरिक है या इज़्राएल में रहने वाला कोई विदेशी है, तुम्हें उसे पत्थर फेंक-फेंक कर मार डालना चाहिए।

भैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने बच्चों को मोलेक को दिया। उसने यह प्रकट किया कि वह मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करता। उसने मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया। सम्भव है साधारण लोग उस व्यक्ति की उपेक्षा करें। सम्भव है वे उस व्यक्ति को न मारे जिसने बच्चों को मोलेक को दिया है। शक्ति में उस व्यक्ति और उसके परिवार के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा जो मेरे प्रति विश्वास नहीं रखता और मोलेक का अनुसरण करता है। 6मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो किसी ओझा और भूतसिद्धि के पास सलाह के लिए जाता है। वह व्यक्ति मुझसे विश्वासघात करता है। इसलिए मैं उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा। विशेष बनों। अपने को पवित्र बनाओ। क्यों? क्योंकि मैं पवित्र हूँ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। भ्रमेर आज्ञाओं का पालन करो और उन्हें याद रखो। मैं यहोवा हूँ और मैंने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है। यदि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता के अनिष्ट की कामना करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उसने अपने पिता या माँ का अनिष्ट चाहा है, इसलिए उसे दण्ड देना चाहिए। *

यौन पापों के दण्ड

10"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो स्त्री और पुरुष दोनों अनैतिक सम्बन्ध के अपराधी हैं। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों को मार डालना चाहिए। 11यदि कोई व्यक्ति अपनी विमाता से यौन सम्बन्ध करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति को और उसकी विमाता दोनों को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति ने अपने पिता के विरुद्ध पाप किया है। *

12"यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्रवधू के साथ यौनसम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

13"यदि कोई व्यक्ति किसी पुरुष के साथ स्त्री जैसा यौन सम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

14"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री और उसकी माँ के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो यह यौन पाप है। लोगों

को उस व्यक्ति तथा दोनों स्त्रियों को आग में जला देना चाहिए। इस यौन पाप को अपने लोगों में मत होने दो।

15"यदि कोई व्यक्ति किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करे तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए और तुम्हें उस जानवर को भी मार देना चाहिए। 16यदि कोई स्त्री किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करती है तो तुम्हें उस स्त्री और जानवर को मार डालना चाहिए। उन्हें अवश्य मार देना चाहिए। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

17"यह एक भाई और उसकी बहन के लिए लज्जानक है कि आपस में वे यौन सम्बन्ध करें। * उन्हें सामाजिक रूप में दण्ड मिलना चाहिए। वे अपने लोगों से अलग कर दिए जाने चाहिए। वह व्यक्ति जिसने अपनी बहन के साथ यौन सम्बन्ध किया है, अपने पाप के लिए दण्ड पाएगा।

18"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिकधर्म के रक्त प्रवाह के समय यौन सम्बन्ध करेगा तो स्त्री पुरुष दोनों को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। उन्होंने पाप किया है क्योंकि उसने खून के स्रोत को उघाड़ा। 19तुम्हें यौन सम्बन्ध अपनी माँ की बहन या पिता की बहन के साथ नहीं करना चाहिए। यह गोत्रिय अनैतिकता का पाप है। * उन्हें उनके पाप के लिए दण्ड मिलेगा।

20"किसी पुरुष को अपने चाचा/मामा की पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह व्यक्ति तथा उसकी चाची व मामी को उनके पापों के लिए दण्ड मिलेगा। वे बिना किसी सन्तान के मरेंगे।

21"किसी व्यक्ति के लिए यह बुरा है कि वह अपने भाई की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करे। उस व्यक्ति ने अपने भाई के विरुद्ध पाप किया है। * उनकी कोई सन्तान नहीं होगी।

22"तुम्हें मेरे सारे नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिए और तुम्हें उनका पालन अवश्य करना चाहिए। मैं तुम्हें तुम्हारे प्रदेश को ले जा रहा हूँ। तुम लोग उस प्रदेश में रहोगे। यदि तुम लोग मेरे नियमों और निर्णयों को मानते रहे तो वह प्रदेश तुम लोगों को निकाल बाहर नहीं करेगा। 23मैं अन्य लोगों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश कर रहा हूँ। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने वे सभी पाप किए। मैं उन पापों से घृणा करता हूँ। इसलिए जिस प्रकार वे लोग रहे, उस तरह तुम नहीं रहोगे। 24मैंने कहा है कि तुम उनका प्रदेश प्राप्त करोगे। मैं उनका प्रदेश तुमको दूँगा। यह तुम्हारा प्रदेश होगा।

आपस में यौन सम्बन्ध करना शाब्दिक "वह उसकी नग्नता को देखता है और वह उसकी नग्नता को देखती है।"

गोत्रीय ... पाप है गोत्र के व्यक्तियों के यौन सम्बन्ध का पाप।

उस व्यक्ति ... पाप किया है शाब्दिक "उस व्यक्ति ने अपने भाई की नग्नता को उघाड़ा है।"

उसने पिता ... देना चाहिये शाब्दिक "उसने अपनी मौत आप बुलाई है।"

पिता ... है शाब्दिक "उसने अपने पिता की नग्नता को उघाड़ा।"

वह प्रदेश बहुत सुन्दर है। उसमें दूध व मधु की नदियाँ बहती हैं। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

“मैंने तुम्हें विशेष बनाया है। मैंने तुम्हारे साथ अन्य लोगों से भिन्न व्यवहार किया है। 25 इसलिए तुम्हें शुद्ध जानवरों के साथ अशुद्ध जानवरों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें शुद्ध पक्षियों के साथ अशुद्ध पक्षियों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। उन में से किसी भी अशुद्ध पक्षी, जानवर और कीट-पतंग को मत खाओ जो भूमि पर रंगते हैं। मैंने उन चीज़ों को अशुद्ध बनाया है। 26 मैंने तुम्हें अपना विशेष जन बनाया है। इसलिए तुम्हें मेरे लिए पवित्र होना चाहिए। क्यों? क्योंकि मैं यहोवा हूँ और मैं पवित्र हूँ।

27 “कोई पुरुष या कोई स्त्री जो ओझा हो या कोई भूतसिद्धि हो, तो उन्हें निश्चय ही मार दिया जाना चाहिए। लोगों को चाहिए कि वे उन्हें पत्थर मार-मार कर मार दें। उन्हें मार ही दिया जाना चाहिए।”

याजकों के लिये नियम

21 यहोवा ने मूसा से कहा, “ये बातें हारून के याजक पुत्रों से कहो: किसी मरे व्यक्ति को छूकर याजक अपने को अशुद्ध न करें। 2 किन्तु यदि मरा हुआ व्यक्ति उसके नजदीकी सम्बन्धियों में से कोई है तो वह मृतक के शरीर को छू सकता है। याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है यदि मृत व्यक्ति उसकी माँ, पिता, उसका पुत्र, या पुत्री, उसका भाई, 3 उसकी अविवाहित बहन है। (यह बहन उसकी नजदीकी है क्योंकि उसका पति नहीं है।) इसलिए याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है, यदि वह मरती है। 4 किन्तु याजक अपने को अशुद्ध नहीं कर सकता, यदि मरा व्यक्ति उसके दासों में से एक हो। *

5 “याजक को शोक प्रकट करने के लिए अपने सिर का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। याजक को अपनी दाढ़ी के सिरों नहीं कटवाने चाहिए। याजक को अपने शरीर को कहीं भी काटना नहीं चाहिए। 6 याजक को अपने परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए। इन्हे परमेश्वर के नाम के लिए सम्मान दिखाना चाहिए। क्यों? क्योंकि वे रोटी और आग द्वारा भेंट यहोवा को पहुँचाते हैं। इसलिए उन्हें पवित्र होना चाहिए।

7 “याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए याजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जिसने किसी के साथ यौन सम्बन्ध किया हो। याजक को किसी वेश्या, या किसी तलाक दी गई स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। 8 याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए तुम्हें उसके साथ

विशेष व्यवहार करना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह पवित्र चीज़ें ले चलता है। वह पवित्र रोटी यहोवा को पहुँचाता है और मैं पवित्र हूँ। मैं यहोवा हूँ, और मैं तुम्हें पवित्र बनाता हूँ।

9 “यदि याजक की पुत्री वेश्या बन जाती है तो वह अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करती है तथा अपने पिता को कलंक लगाती है। इसलिए उसे जला देना चाहिए।

10 “महायाजक अपने भाइयों में से चुना जाता था। अभिषेक का तेल उसके सिर पर डाला जाता था। इस प्रकार वह महायाजक के विशेष कर्तव्य के लिए नियुक्त किया जाता था। वह महायाजक के विशेष वस्त्र को पहनने के लिए चुना जाता था। इसलिए उसे अपने दुःख को प्रकट करने वाला कोई काम समाज में नहीं करना चाहिए। उसे अपने बाल जंगली ढंग से नहीं बिखरने चाहिए। उसे अपने वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए। 11 उसे मुर्द को छूकर अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए। उसे किसी मुर्द के पास नहीं जाना चाहिए। चाहे वह उसके अपने माता-पिता का ही क्यों न हो। 12 महायाजक को परमेश्वर के पवित्र स्थान के बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि उसने ऐसा किया तो वह अशुद्ध हो जायेगा और तब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध कर देगा। अभिषेक का तेल महायाजक के सिर पर डाला जाता था। यह उसे शेष लोगों से भिन्न करता था। मैं यहोवा हूँ।

13 “महायाजक को विवाह करके उसे पत्नी बनाना चाहिए जो कुवॉरी हो। 14 महायाजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जो किसी अन्य पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध रख चुकी हो। महायाजक को किसी वेश्या, या तलाक दी गई स्त्री, या विधवा स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। महायाजक को अपने लोगों में से एक कुवॉरी से विवाह करना चाहिए। 15 इस प्रकार लोग उसके बच्चों को सम्मान देंगे। मैं, यहोवा ने, याजक को विशेष काम के लिए भिन्न बनाया है।”

16 यहोवा ने मूसा से कहा, 17 “हारून से कहो: यदि तुम्हारे वंशजों की सन्तानों में से कोई अपने में कोई दोष पाए तो उन्हें विशेष रोटी परमेश्वर तक नहीं ले जानी चाहिए। 18 कोई व्यक्ति, जिसमें कोई दोष हो, याजक का काम न करे और न ही मेरे पास भेंट लाए, ये लोग याजक के रूप में सेवा नहीं कर सकते:

अन्धे व्यक्ति, लांगड़े व्यक्ति, विकृत चेहरे वाले व्यक्ति, अत्यधिक लम्बी भुजा और टाँग वाले व्यक्ति।

19 टूटे पैर या हाथ वाले व्यक्ति, 20 कुबड़े व्यक्ति, बौने, आँख में दोष वाले व्यक्ति, 21 खुजली और चर्म रोग वाले व्यक्ति, बधिया किए गए नपुंसक व्यक्ति।

21 यदि हारून के वंशजों में से कोई कुछ दोष वाला है तो वह यहोवा को आग से बलि नहीं चढ़ा सकता और वह व्यक्ति विशेष रोटी अपने परमेश्वर को नहीं पहुँचा

किन्तु याजक ... एक ही शब्दिक “किन्तु स्वामी को अपने लोगों के लिए अशुद्ध नहीं होना चाहिये।”

सकता। 22वह व्यक्ति याजकों के परिवार से है अतः वह पवित्र रोटी खा सकता है। वह अति पवित्र रोटी भी खा सकता है। 23किन्तु वह सबसे अधिक पवित्र स्थान में पर्दे से होकर नहीं जा सकता और न ही वह वेदी के पास जा सकता है। क्यों? क्योंकि उस में कुछ दोष है। उसे मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। मैं यहोवा उन स्थानों को पवित्र बनाता हूँ।”

24इसलिए मूसा ने ये बातें हारून से, हारून के पुत्रों और इम्राएल के सभी लोगों से कही।

22 परमेश्वर यहोवा ने मूसा से कहा, 2“हारून और उसके पुत्रों से कहे: इम्राएल के लोग जो चीजें मुझे देंगे, वे पवित्र हो जाएंगी। वे मेरी हैं। इसलिए तुम याजकों को वे चीजें नहीं लेनी चाहिए। यदि तुम उन पवित्र चीजों का उपयोग करते हो तो तुम यह प्रकट करोगे कि तुम मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करते। मैं यहोवा हूँ। यदि तुम्हारे सभी वंशजों में से कोई व्यक्ति उन चीजों को छूएगा तो वह अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति मुझसे अलग हो जाएगा। इम्राएल के लोगों ने वे चीजें मुझे दीं। मैं यहोवा हूँ।

4“यदि हारून के किसी वंशज को बुरे चर्म रोगों में से कोई रोग हो या उससे कुछ रिस रहा हो तो वह तब तक पवित्र भोजन नहीं कर सकता जब तक वह शुद्ध न हो जाय। यह नियम किसी भी याजक के लिए है जो अशुद्ध हो। वह याजक किसी शव को छू कर या अपने वीर्य पात से अशुद्ध हो सकता है। 5वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी रेंगने वाले जानवर को छूए। वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी अशुद्ध व्यक्ति को छूए। इसका कोई महत्व नहीं कि उस व्यक्ति को किस चीज ने अशुद्ध किया है। 6यदि कोई व्यक्ति उन चीजों को छूएगा तो वह सभ्यता तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाना चाहिए। पानी डालकर नहाये बिना वह पवित्र भोजन नहीं कर सकता है। 7वह सूरज के डूबने पर ही शुद्ध होगा। तभी वह पवित्र भोजन कर सकता है। क्यों? क्योंकि वह भोजन उसका है।

8“यदि याजक को कोई ऐसा जानवर मिलता है जो स्वयं मर गया हो या किसी अन्य जानवर द्वारा मार दिया गया हो तो उसे मेरे जानवर को नहीं खाना चाहिए। यदि वह व्यक्ति उस जानवर को खाता है तो वह अशुद्ध होगा। मैं यहोवा हूँ।

9“याजक को मेरी सेवा के विशेष समय रखने होंगे। उन्हें उन दिनों सावधान रहना होगा। उन्हें इस बात के लिए सावधान रहना होगा कि वे पवित्र चीजों को अपवित्र न बनाएँ। यदि वे सावधान रहेंगे तो मरेंगे नहीं। मैं यहोवा ने उन्हें इस विशेष काम के लिए दूसरों से भिन्न किया है। 10केवल याजकों के परिवार के व्यक्ति ही पवित्र भोजन खा सकते हैं। याजक के साथ ठहरने वाला

अतिथि या मजदूर पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाएगा। 11किन्तु यदि याजक अपने धन से किसी दास को खरीदता है तो वह पवित्र चीजों में से कुछ को खा सकता है और याजक के घर में उत्पन्न दास भी उस पवित्र भोजन में से कुछ खा सकता है। 12किसी याजक की पुत्री ऐसे व्यक्ति से विवाह कर सकती है जो याजक न हो। यदि वह ऐसा करती है तो पवित्र भेंट में से कुछ नहीं खा सकती। 13किसी याजक की पुत्री विधवा हो सकती है, या उसे तलाक दिया जा सकता है। यदि उसके भरन पोषण के लिए उसके बच्चे नहीं हैं और वह अपने पिता के यहाँ लौटती है, जहाँ वह बचपन में रही है तो वह पिता के भोजन में से कुछ खा सकती है। किन्तु केवल याजक के परिवार के व्यक्ति ही इस भोजन को खा सकते हैं।

14“कोई व्यक्ति भूल से कुछ पवित्र भोजन खा सकता है। उस व्यक्ति को वह पवित्र भोजन याजक को देना चाहिए और उसके अतिरिक्त उस भोजन के मूल्य का पाँचवाँ भाग उसे और देना होगा।

15“इम्राएल के लोग यहोवा को भेंट चढ़ाएँगे। वे भेंट पवित्र हो जाती हैं। इसलिए याजक को उन पवित्र चीजों को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। 16यदि याजक उन चीजों को अपवित्र समझते हैं तो वे तब अपने पाप को बढ़ाएँगे जब पवित्र भोजन को खाएँगे। मैं, यहोवा, उन्हें पवित्र बनाता हूँ।”

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18“हारून और उसके पुत्रों, और इम्राएल के सभी लोगों से कहे: सम्भव है कि इम्राएल का कोई नागरिक या कोई विदेशी कोई भेंट लाना चाहे। सम्भव है उसने कोई विशेष वचन दिया हो, और यह उसके लिए हो। या सम्भव है यह वह विशेष भेंट हो जिसे वह व्यक्ति अर्पित करना चाहता हो। 19-20ये ऐसी भेंट हैं जिनमें लोग इसलिए लाते हैं कि वे यहोवा को भेंट चढ़ाना चाहते हैं। तुम्हें कोई ऐसी भेंट नहीं स्वीकार करनी चाहिए जिसमें कोई दोष हो। मैं उस भेंट से प्रसन्न नहीं होऊँगा! यदि भेंट एक साँड़ है, या एक भेड़ है, या एक बकरा है तो वह नर होना चाहिए और इसमें कोई दोष नहीं होना चाहिए।

21“कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि चढ़ा सकता है। वह मेलबलि उस व्यक्ति द्वारा दिए गए किसी वचन के लिए भेंट के रूप में हो सकती है या यह कोई स्वतः प्रेरित भेंट हो सकती है जिसे वह व्यक्ति यहोवा को चढ़ाना चाहता है। यह बैल या मेढ़ा हो सकता है। किन्तु वह स्वस्थ तथा दोष रहित होना चाहिए। 22तुम्हें यहोवा को ऐसा कोई जानवर नहीं भेंट करना चाहिए जो अन्धा हो या जिसकी हड्डियाँ टूटी हों, या जो लंगड़ा हो, या जिसके कोई घाव रिस रहा हो या बुरे चर्म रोग वाला हो। तुम्हें यहोवा की वेदी की आग पर उस बीमार जानवर की भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए।

23^{कभी-कभी} किसी मवेशी या मेमने के पैर अत्याधिक लम्बे हो सकते हैं या ऐसे पैर हो सकते हैं जिनका विकास ठीक से न हुआ हो। यदि कोई व्यक्ति ऐसे जानवर को यहोवा को विशेष भेंट के रूप में चढ़ाना चाहता है तो वह स्वीकार किया जाएगा। किन्तु इसे किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए वचन के लिए किये जाने वाले भुगतान के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा। 24^{यदि जानवर के अण्ड कोष जख्मी, कुचले हुए या फाड़े हुए हों तो तुम्हें उस जानवर की भेंट यहोवा को नहीं चढ़ानी चाहिए।}

25^{“तुम्हें विदेशियों से बलि के लिए ऐसे जानवरों को नहीं लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये जानवर किसी प्रकार चोट खाए हुए हैं। उनमें कुछ दोष है। ये स्वीकार नहीं किए जाएंगे।”}

26^{यहोवा ने मूसा से कहा, 27^{“जब कोई बछड़ा, या भेड़, या बकरी पैदा हो तो अपनी माँ के साथ उसे सात दिन रहने देना चाहिए। तब आठवें दिन और उसके बाद यह जानवर यहोवा को आग द्वारा दी जाने वाली बलि के रूप में स्वीकार किया जाएगा। 28^{किन्तु तुम्हें उसी दिन उस जानवर और उसकी माँ को नहीं मारना चाहिए। यही नियम गाय और भेड़ों के लिए है।}}}

29^{“यदि तुम्हें यहोवा को कोई विशेष कृतज्ञता बलि चढ़ानी हो तो तुम उस भेंट को चढ़ाने में स्वतन्त्र हो। किन्तु यह इस प्रकार करो कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करे। 30^{तुम्हें पूरा जानवर उसी दिन खा लेना चाहिए। तुम्हें अगली सुबह के लिए कुछ भी मॉस नहीं छोड़ना चाहिए। मैं यहोवा हूँ। 31^{मेरे आदेशों को याद रखो और उनका पालन करो। मैं यहोवा हूँ। 32^{मेरे पवित्र नाम का सम्मान करो। मुझे इज़्राएल के लोगों के लिए बहुत विशिष्ट होना चाहिए। मैं, यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है। 33^{मैं तुम्हें मिश्र से लाया। मैं तुम्हारा परमेश्वर बना। मैं यहोवा हूँ।”}}}}}

विशेष पवित्र दिन

23^{यहोवा ने मूसा के कहा, 2^{“इज़्राएल के लोगों से कहो: तुम यहोवा के निश्चित पर्वों को पवित्र घोषित करो। ये मेरे विशेष पवित्र दिन हैं:}}

सब्त

3^{“छः दिन काम करो। किन्तु सातवाँ दिन, आराम का एक विशेष दिन या पवित्र मिलन का दिन होगा। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। यह तुम्हारे सभी घरों में यहोवा का सब्त है।}

फ़सह पर्व

4^{“ये यहोवा के चुने हुए पवित्र दिन हैं। उनके लिए निश्चित समय पर तुम पवित्र सभाओं की घोषणा करोगे।}

5^{यहोवा का फ़सह पर्व पहले महीने की चौदह तारीख को सन्ध्या काल में है।}

अख़मीरी मैदे के फूलकों का पर्व

6^{“उसी महीने की पन्द्रह तारीख को अख़मीरी मैदे के फूलकों का पर्व होगा तुम सात दिन तक अख़मीरी मैदे के फूलके खाओगे। 7^{इस पर्व के पहले दिन तुम एक पवित्र सभा करोगे। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। 8^{सात दिन तक तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। सातवें दिन एक पवित्र सभा होगी। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए।”}}}

पहली फ़सल का पर्व

9^{यहोवा ने मूसा से कहा, 10^{“इज़्राएल के लोगों से कहो: तुम उस धरती पर जाओगे जिसे मैं तुम्हें दूँगा। तुम उसकी फ़सल काटोगे। उस समय तुम्हें अपनी फ़सल की पहली पूली याजक के पास लानी चाहिए। 11^{याजक पूली को यहोवा के सामने उतोलित करेगा। तब वह तुम्हारे लिए स्वीकार कर ली जाएगी। याजक पूली को रविवार के प्रातः काल उतोलित करेगा।}}}

12^{“जिस दिन तुम पूली को उतोलित करो, उस दिन तुम एक वर्ष का एक नर मेमना बलि चढ़ाओगे। उस मेमने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। वह मेमना यहोवा को होमबलि होगी। 13^{तुम्हें चार क्वार्ट अच्छे जैतून के तेल मिले आते की अन्नबलि देनी चाहिए। तुम्हें एक क्वार्ट दाखमधु भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा को प्रसन्न करने वाली सुगन्ध होगी। 14^{जब तक तुम अपने परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ाते, तब तक तुम्हें कोई नया अन्न, या फल या नये अन्न से बनी रोटी नहीं खानी चाहिए। यह नियम तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहेगा।}}}

सप्ताहों का पर्व

15^{“उस रविवार के प्रातःकाल से वह दिन जब तुम पूली उतोलन भेंट के लिए लाते हो, सात सप्ताह गिनो। 16^{सातवें सप्ताह के अगले रविवार को (अर्थात् पचास दिन) बाद तुम यहोवा के लिये नये अन्नबलि लाओगे। 17^{उस दिन तुम अपने घरों से दो-दो रोटियाँ लाओ। ये रोटियाँ उतोलन भेंट होगी। खमीर का उपयोग करो और चार क्वार्ट आटे की रोटियाँ बनाओ। वह तुम्हारी पहली फ़सल से यहोवा की भेंट होगी।}}}

18^{“लोगों से अन्नबलि के साथ में एक बछड़ा, दो भेड़े और एक-एक वर्ष के सात नर मेमने भेंट किए जाएंगे। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। ये यहोवा की होमबलि होंगे। वे आग द्वारा यहोवा को दी गई भेंट होगी। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होगा। 19^{तुम भी}}

पापबलि के रूप में एक बकरा तथा एक वर्ष के दो मेमने मेलबलि के रूप में चढ़ाओगे।

20“याजक यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए दो मेमने और पहली फ़सल की रोटी उन्हें उत्तोलित करेगा। वे यहोवा के लिए पवित्र हैं। वे याजक के होंगे। 21उसी दिन, तुम एक पवित्र सभा बुलाओगे। तुम कोई काम नहीं करोगे। यह नियम तुम्हारे सभी घरों में सदैव चलेगा।

22“जब तुम अपने खेतों की फ़सल काटो तो खेतों के कोनों की सारी फ़सल मत काटो। जो अन्न जमीन पर गिरे, उसे मत उठाओ। उसे तुम गरीब लोगों तथा तुम्हारे देश में यात्रा करने वाले विदेशियों के लिए छोड़ दो। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

तुरही का पर्व

23यहोवा ने मूसा से फिर कहा, 24“इज़्राएल के लोगों से कहो: सातवें महीने के प्रथम दिन तुम्हें आराम का विशेष दिन मानना चाहिए। उस दिन एक धर्म सभा होगी। तुम्हें इसे मनाने के लिए तुरही बजानी चाहिए। 25तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाने के लिए बलि लाओगे।”

प्रायश्चित्त का दिन

26यहोवा ने मूसा से कहा, 27“सातवें महीने के दसवें दिन प्रायश्चित्त का दिन होगा। उस दिन एक धर्म सभा होगी। तुम भोजन नहीं करोगे* और तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। 28तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। क्यों? क्योंकि यह प्रायश्चित्त का दिन है। उस दिन याजक यहोवा के सामने जाएगा और वह उपवासना करेगा जो तुम्हें शुद्ध बनाती है।

29“यदि कोई व्यक्ति उस दिन उपवास करने से मना करता है तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। 30यदि कोई व्यक्ति उस दिन काम करेगा तो उसे मैं (परमेश्वर) उसके लोगों में से काट दूँगा। 31तुम्हें कोई भी काम नहीं करना चाहिए। यह नियम तुम जहाँ कहीं रहो, सदैव रहेगा। 32यह तुम्हारे लिए आराम का विशेष दिन होगा। तुम्हें भोजन नहीं करना चाहिए। तुम आराम के इस विशेष दिन को महीने के नवें दिन की सन्ध्या* से आरम्भ करोगे। यह आराम का विशेष दिन उस सन्ध्या से आरम्भ करके अगली सन्ध्या तक रहता है।”

आश्रय का पर्व

33यहोवा ने मूसा से फिर कहा, 34“इज़्राएल के लोगों से कहो : सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आश्रय का पर्व होगा। यहोवा के लिए यह पवित्र पर्व सात दिन तक

भोजन नहीं करोगे शाब्दिक “अपने को विनीत दिखाओगे।”
सन्ध्या यहूदी लोगों के लिए दिन का आरम्भ सन्ध्या से होता है।

चलेगा। 35पहले दिन एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई काम नहीं करना चाहिए। 36तुम सात दिनों तक यहोवा के लिये आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। आठवें दिन तुम दूसरी धर्म सभा करोगे। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। यह एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई काम नहीं करना चाहिए।

37“ये यहोवा का विशेष पवित्र दिन है। उन दिनों धर्म सभाएँ होंगी। तुम यहोवा को होमबलि, अन्नबलि, बलियाँ, पेयबलि अग्नि द्वारा चढ़ाओगे। तुम वे बलियाँ ठीक समय पर लाओगे। 38तुम यहोवा के सब दिवसों को याद करने के अतिरिक्त उन पवित्र दिनों का पर्व मनाओगे। तुम उन बलियों को यहोवा को अपनी अन्नबलि के अतिरिक्त दोगे। तुम विशेष दिए गए अपने वचन को पूरा करने के रूप में दी गई किसी भेंट के अतिरिक्त उन चीज़ों को दोगे। वे उन विशेष भेंटों के अतिरिक्त होंगी जिन्हें तुम यहोवा को देना चाहते हो।

39“सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन, जब तुम अपने खेतों से फसल ला चुकोगे, सात दिन तक यहोवा का पर्व मनाओगे। तुम पहले और आठवें दिन आराम करोगे। 40पहले दिन तुम फलदार पेड़ों से अच्छे फल लोगे और तुम नाले के किनारे के खजूर के पेड़, चीड़ और बेंत के पेड़ों से शाखाएँ लोगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक पर्व मनाओगे।

41“तुम इस पवित्र दिन को हर वर्ष यहोवा के लिये सात दिनों तक मनाओगे। यह नियम सदैव रहेगा। तुम इस पवित्र दिन को सातवें महीने में मनाओगे। 42तुम सात दिन तक अस्थायी आश्रयों में रहोगे। इज़्राएल में उत्पन्न हुए सभी लोग उन आश्रयों में रहेंगे। 43क्यों? इससे तुम्हारे सभी वंशज यह जानेंगे कि मैंने इज़्राएल के लोगों को अस्थायी आश्रयों में रहने वाला उन समय बनाया जिस समय मैं उन्हें मिश्र से लाया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

44इस प्रकार मूसा ने इज़्राएल के लोगों को यहोवा के विशेष पवित्र दिनों के बारे में बताया।

दीपाधार और पवित्र रोटी

24 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“इज़्राएल के लोगों को कोल्हू से निकाला हुआ जैतून का शुद्ध तेल अपने पास लाने का आदेश दो। वह तेल दीपकों के लिए है। ये दीपक बिना बुझे जलते रहने चाहिए। 3हारून यहोवा के मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के पर्दे के आगे सन्ध्या समय से प्रातःकाल तक दीपकों को जलाये रखेगा। यह नियम सदा-सदा के लिए है। 4हारून को सोने की दीपाधार पर यहोवा के सामने दीपकों को सदैव जलता हुआ रखना चाहिए।

5“अच्छा महीने आटा लो और उसकी बारह रोटियाँ बनाओ। हर एक रोटी के लिए चार क्वार्ट आटे का

उपयोग करो। 6उन्हें दो पैंक्तियों में सुनहरी मेज़ पर यहोवा के सामने रखो। हर एक पैंक्ति में छः रोटियाँ होंगी। 7हर एक पैंक्ति पर शुद्ध लोबान रखो। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट के सम्बन्ध में यहोवा को याद दिलाने में सहायता करेगा। 8हर एक सप्ताह दिवस को हारून रोटियों को यहोवा के सामने क्रम में रखेगा। इसे सदैव करना चाहिए। इज़्राएल के लोगों के साथ यह वाचा सदैव बनी रहेगी। 9वह रोटी हारून और उसके पुत्रों की होगी। वे रोटियों को पवित्र स्थान में खायेंगे। क्यों? क्योंकि वह रोटी यहोवा को आग द्वारा चढ़ाई गई भेंटों में से है। वह रोटी सदैव हारून का हिस्सा है।”

वह व्यक्ति जिसने यहोवा को शाप दिया

10एक इज़्राएली स्त्री का पुत्र था। उसका पिता मिश्री था। इज़्राएली स्त्री का यह पुत्र इज़्राएली था। वह इज़्राएली लोगों के बीच में घूम रहा था और उसने डेरे में लड़ना आरम्भ किया। 11इज़्राएली स्त्री के लड़के ने यहोवा के नाम के बारे में बुरी बातें कहनी शुरू कीं। इसलिए लोग उस पुत्र को मूसा के सामने लाए। (लड़के की माँ का नाम शलोमीत था जो दान के परिवार समूह से दिव्री की पुत्री थी।) 12लोगों ने लड़के को कैदी की तरह पकड़े रखा और तब तक प्रतीक्षा की, जब तक यहोवा का आदेश उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हो गया।

13तब यहोवा ने मूसा से कहा,

14“उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाओ, जिसने शाप दिया है। तब उन सभी लोगों को एक साथ बुलाओ जिन्होंने उसे शाप देते सुना है। वे लोग अपने हाथ उसके सिर पर रखेंगे।* और तब सभी लोग उस पर पत्थर मारेंगे और उसे मार डालेंगे। 15तुम्हें इज़्राएल के लोगों से कहना चाहिए : यदि कोई व्यक्ति अपने परमेश्वर को शाप देता है तो उस व्यक्ति को दण्ड मिलना चाहिए। 16कोई व्यक्ति, जो यहोवा के नाम के विरुद्ध बोलता है, अवश्य मार दिया जाना चाहिए। सभी लोगों को उसे पत्थर मारने चाहिए। विदेशी को वैसे ही दण्ड मिलना चाहिए जैसे इज़्राएल में जन्म लेने वाले व्यक्ति को मिलता है। यदि कोई व्यक्ति यहोवा के नाम को अपशब्द कहता है तो उसे अवश्य मार देना चाहिए।

17“और यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार डालता है तो उसे अवश्य मार डालना चाहिए। 18यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के जानवर को मार डालता है तो उसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए।*

हाथ उसके सिर पर रखेंगे इससे पता चलता है कि वे सब लोग उस लड़के को दण्ड देने में हाथ बटा रहे थे।

दूसरा जानवर देना चाहिये शाब्दिक इसके लिए भुगतान करो “जीवन के लिये जीवन।”

19“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोस में किसी को चोट पहुँचाता है तो उस व्यक्ति को उसी प्रकार की चोट उस व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए।* 20एक टूटी हड्डी के लिए एक टूटी हड्डी, एक आँख के लिए एक आँख, और एक दाँत के लिए दाँत। उसी प्रकार की चोट उस व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए, जैसा उसने दूसरे को पहुँचाई है। 21इसलिए जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के जानवर को मारे तो इसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए। किन्तु जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार डालता है वह अवश्य मार डाला जाना चाहिए। 22तुम्हारे लिए एक ही प्रकार का न्याय होगा। यह विदेशी और तुम्हारे अपने देशवासी के लिए समान होगा। क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।”

23तब मूसा ने इज़्राएल के लोगों से बात की और वे उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाए, जिसने शाप दिया था। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। इस प्रकार इज़्राएल के लोगों ने वह किया जो यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

भूमि के लिए आराम का समय

25 यहोवा ने मूसा से सीनै पर्वत पर कहा। यहोवा ने कहा, 2“इज़्राएल के लोगों से कहो, तुम लोग उस भूमि पर जाओगे जिसे मैं तुमको दे रहा हूँ। उस समय तुम्हें भूमि को आराम का विशेष समय देना चाहिए। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए धरती के आराम का विशेष समय होगा। 3तुम छः वर्ष तक अपने खेतों में बीज बोओगे। तुम अपने अँगूर के बागों में छः वर्ष तक कटाई करोगे और उसके फल लाओगे। 4किन्तु सातवें वर्ष तुम उस भूमि को आराम करने दोगे। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए आराम का विशेष समय होगा। तुम्हें अपने खेतों में बीज नहीं बोना चाहिए और अँगूर के बागों में बेलों की कटाई नहीं करनी चाहिए। 5तुम्हें उन फ़सलों की कटाई नहीं करनी चाहिए जो फ़सल काटने के बाद अपने आप उगती हैं। तुम्हें अपनी उन अँगूर की बेलों से अँगूर नहीं उतारने चाहिए जिनकी तुमने कटाई नहीं की है। यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा। 6यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा, किन्तु तुम्हारे पास फिर भी पर्याप्त भोजन रहेगा। तुम्हारे पुरुष व स्त्री दासों के लिए पर्याप्त भोजन रहेगा। मजदूरी पर रखे गए तुम्हारे मजदूर और तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के लिए भोजन रहेगा। 7तुम्हारे मवेशियों और अन्य जानवरों के खाने के लिए पर्याप्त चारा होगा।

यदि ... चाहिये यह नियम समाज को अपराधों का दण्ड निश्चित करने के लिए एक दिशा निर्देश देता है। निजी रूप से बदला लेने की अपेक्षा अपराध के अनुरूप दण्ड समाज को निश्चित करना है।

जुबली मुक्ति वर्ष

8“तुम सात वर्षों के सात समूहों को गिनेगो। ये उन्नचास वर्ष होंगे। इस समय के भीतर भूमि के लिए सात वर्ष आराम के होंगे। 9प्रायश्चित्त के दिन तुम्हें मेढ़े का सींग बजाना चाहिए। वह सातवें महीने के दसवें दिन होगा। तुम्हें पूरे देश में मेढ़े का सींग बजाना चाहिए। 10तुम पचासवें वर्ष को विशेष वर्ष मनाओगे। तुम अपने देश में रहने वाले सभी लोगों की स्वतन्त्रता घोषित करोगे। इस समय को “जुबली मुक्तिवर्ष” कहा जाएगा। तुममें से हर एक को उसकी धरती लौटा दी जाएगी।* और तुममें से हर एक अपने परिवार में लौट जाएगा। 11पचासवाँ वर्ष तुम्हारे लिए विशेष उत्सव का वर्ष होगा। उस वर्ष तुम बीज मत बोओ। अपने आप उगी फसल न काटो। अंगूर की उन बेलों से अंगूर मत लो। 12वह जुबली वर्ष है। यह तुम्हारे लिए पवित्र समय होगा। तुम उस पैदावार को खाओगे जो तुम्हारे खेतों से आती है। 13जुबली वर्ष में हर एक व्यक्ति को उसकी धरती वापस हो जाएगी।

14“किसी व्यक्ति को अपनी भूमि बेचने में मत ठगो और जब तुम उससे भूमि खरीदो तब उसे अपने को मत ठगने दो। 15यदि तुम किसी की भूमि खरीदना चाहते हो तो पिछले जुबली से काल गणना करो और उस गणना का उपयोग धरती का ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। यदि तुम भूमि को बेचो, तो फसलों के काटने के वर्षों को गिनो और वर्षों की उस गणना का उपयोग ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। 16यदि अधिक वर्ष हैं तो मूल्य ऊँचा होगा। यदि वर्ष थोड़े हैं तो मूल्य कम करो। क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति तुमको सचमुच कुछ वर्षों की कुछ फसलें ही बेच रहा है। अगली जुबली पर भूमि उसके परिवारों की हो जाएगी। 17तुम्हें एक दूसरे को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यही हूँ।

18“मेरे नियमों और निर्णयों को याद रखो। उनका पालन करो। तब तुम अपने देश में सुरक्षित रहोगे। 19भूमि तुम्हारे लिए उत्तम फसल पैदा करेगी। तब तुम्हारे पास बहुत अधिक भोजन होगा और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे।

20“किन्तु कदाचित्त तुम यह कहो, ‘यदि हम बीज न बोए या अपनी फसलें न इकट्ठी करें तो सातवें वर्ष हम लोगों के लिए खाने को कुछ भी नहीं रहेगा।’ 21चिन्ता मत करो! मैं छठे वर्ष में अपनी आशीष को तुम्हारे पास आने का आदेश दूँगा। भूमि तीन वर्ष तक फसल पैदा करती रहेगी। 22जब आठवें वर्ष तुम बोओगे तब तक फसल पैदा करती रहेगी। तुम पुरानी पैदावार को नवें

धरती लौटा दी जाएगी इज्राएल में भूमि परिवारों और परिवार-समूहों की थी। कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता था, किन्तु जुबली के समय वह भूमि फिर उसी परिवार या सर्वुक्त परिवार की हो जाती थी जिसे वह सर्वप्रथम दी गई थी।

वर्ष तक खाते रहोगे जब आठवें वर्ष में बोयी हुई फसल घरों में आ जाएगी।

आवासीय भूमि के नियम

23“भूमि वस्तुतः मेरी है। इसलिए तुम इसे स्थायी रूप में नहीं बेच सकते। तुम मेरे साथ मेरी भूमि पर केवल विदेशी और यात्री के रूप में रह रहे हो। 24कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता है, किन्तु उसका परिवार सदैव अपनी भूमि वापस पाएगा। 25कोई व्यक्ति तुम्हारे देश में बहुत गरीब हो सकता है। वह इतना गरीब हो सकता कि उसे अपनी सम्पत्ति बेचनी पड़े। ऐसी हालत में उसके नजदीकी रिश्तेदारों को आगे आना चाहिए और अपने रिश्तेदार के लिए वह सम्पत्ति वापस खरीदनी चाहिए। 26किसी व्यक्ति का कोई ऐसा नजदीकी रिश्तेदार नहीं भी हो सकता है जो उसके लिए सम्पत्ति वापस खरीदे। किन्तु हो सकता है वह स्वयं भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन पा ले। 27तो उसे जब से भूमि बिकी थी तब से वर्षों को गिनना चाहिए। उसे उस गणना का उपयोग, भूमि का मूल्य निश्चित करने के लिए करना चाहिए। तब उसे भूमि को वापस खरीदना चाहिए। तब भूमि फिर उसकी हो जाएगी। 28किन्तु यदि वह व्यक्ति अपने लिए भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं जुटा पाता तो जो कुछ उसने बेचा है वह उस व्यक्ति के हाथ में जिसने उसे खरीदा है, जुबली पर्व के आने तक रहेगा। तब उस विशेष उत्सव के समय भूमि प्रथम भू स्वामी के परिवार की हो जाएगी। इस प्रकार सम्पत्ति पुनः मूल अधिकारी परिवार की हो जाएगी।

29“यदि कोई व्यक्ति नगर परकोटे के भीतर अपना घर बेचता है तो घर के बेचे जाने के बाद एक वर्ष तक उसे वापस लेने का अधिकार होगा। घर को वापस लेने का उसका अधिकार एक वर्ष तक रहेगा। 30किन्तु यदि घर का स्वामी एक पूरा वर्ष बीतने के पहले अपना घर वापस नहीं खरीदता तो नगर परकोटे के भीतर का घर जो व्यक्ति खरीदता है उसका और उसके वंशजों का हो जाता है। जुबली के समय प्रथम गृह स्वामी को वापस नहीं होगा। 31बिना परकोटे वाले नगर खुले मैदान माने जाएंगे। अतः उन छोटे नगरों में बने हुए घर जुबली पर्व के समय प्रथम गृहस्वामी को वापस होंगे।

32“किन्तु लेवियों के नगर के बारे में: जो नगर लेवियों के अपने हैं, उनमें वे अपने घरों को किसी भी समय वापस खरीद सकते हैं। 33यदि कोई व्यक्ति लेवी से कोई घर खरीदे तो लेवीयों के नगर का वह घर फिर जुबली पर्व के समय लेवियों का हो जाएगा। क्यों? क्योंकि लेवी नगर के घर लेवी के परिवार समूह के लोगों के हैं। इज्राएल के लोगों ने उन नगरों को लेवी लोगों को दिया। 34लेवी नगरों के चारों ओर के खेत और चरागाह बेचे नहीं जा सकते। वे खेत सदा के लिए लेवियों के हैं।

दासों के स्वामियों के लिए नियम

35^{सम्भवतः} तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति इतना अधिक गरीब हो जाए कि अपना भरण पोषण न कर सके। तुम उसे एक अतिथि की तरह जीवित रखोगे। 36उसे दिए गए अपने कर्ज पर कोई सूद मत लो। अपने परमेश्वर का सम्मान करो और अपने भाई को अपने साथ रहने दो। 37उसे सूद पर पैसा उधार मत दो। जो भोजन वह करे, उस पर कोई लाभ लेने का प्रयत्न मत करो। 38मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिश्र देश से कनान प्रदेश देने और तुम्हारा परमेश्वर बनने के लिए बाहर लाया।

39^{सम्भवतः} तुम्हारा कोई बन्धु इतना गरीब हो जाय कि वह दास के रूप में तुम्हें अपने को बेचे। तुम्हें उससे दास की तरह काम नहीं लेना चाहिए। 40वह जुबली वर्ष तक मजदूर और एक अतिथि की तरह तुम्हारे साथ रहेगा। 41तब वह तुम्हें छोड़ सकता है। वह अपने बच्चों को अपने साथ ले जा सकता है और अपने परिवार में लौट सकता है। वह अपने पूर्वजों की सम्पत्ति को लौट सकता है। 42क्यों? क्योंकि वे मेरे सेवक हैं। मैंने उन्हें मिश्र की दासता से मुक्त किया। वे फिर दास नहीं होने चाहिए। 43तुम्हें ऐसे व्यक्ति पर क्रूरता से शासन नहीं करना चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए।

44^{तुम्हारे} दास दासियों के बारे में : तुम अपने चारों ओर के अन्य राष्ट्रों से दास दासियाँ ले सकते हो। 45यदि तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के परिवारों के बच्चे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम उन्हें भी दास रख सकते हो। वे बच्चे तुम्हारे दास होंगे। 46तुम इन विदेशी दासों को अपने बच्चों को भी दे सकते हो जो तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे बच्चों के होंगे। वे सदा के लिए तुम्हारे दास रहेंगे। तुम इन विदेशियों को दास बना सकते हो। किन्तु तुम्हें अपने भाईयों, इब्राएल के लोगों पर क्रूरता से शासन नहीं करना चाहिए।

47^{सम्भव है कि} कोई विदेशी यात्री या अतिथि तुम्हारे बीच धनी हो जाय। सम्भव है कि तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति इतना गरीब हो जाय कि वह अपने को तुम्हारे बीच रहने वाले किसी विदेशी या विदेशी परिवार के सदस्य को दास के रूप में बेचे। 48वह व्यक्ति वापस खरीदे जाने और स्वतन्त्र होने का अधिकारी होगा। उसके भाईयों में से कोई भी उसे वापस खरीद सकता है 49अथवा उसके चाचा, मामा व चचेरे, ममेरे भाई उसे वापस खरीद सकते हैं या उसके नजदीकी रिश्तेदारों में से उसे कोई खरीद सकता है अथवा यदि व्यक्ति पर्याप्त धन पाता है तो स्वयं धन देकर वह फिर मुक्त हो सकता है।

50^{तुम} उसका मूल्य कैसे निश्चित करोगे? विदेशी के पास जब से उसने अपने को बेचा है तब से अगली

जुबली तक के वर्षों को तुम गिनोगे। उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित करने में करो। क्यों? क्योंकि वस्तुतः उस व्यक्ति ने कुछ वर्षों के लिए उसे 'मजदूरी' पर रखा।

51^{यदि} जुबली के वर्ष के पूर्व कई वर्ष हो तो व्यक्ति को मूल्य का बड़ा हिस्सा लौटाना चाहिए। यह उन वर्षों की संख्या पर आधारित है। 52यदि जुबली के वर्ष तक कुछ ही वर्ष शेष हो तो व्यक्ति को मूल कीमत का थोड़ा सा भाग ही लौटाना चाहिए। 53किन्तु वह व्यक्ति प्रति वर्ष विदेशी के यहाँ मजदूर की तरह रहेगा, विदेशी को उस व्यक्ति पर क्रूरता से शासन न करने दो।

54^{वह} व्यक्ति किसी के द्वारा वापस न खरीदे जाने पर भी मुक्त होगा। जुबली के वर्ष वह तथा उसके बच्चे मुक्त हो जाएंगे। 55क्यों? क्योंकि इब्राएल के लोग मेरे दास हैं। वे मेरे सेवक हैं। मैंने मिश्र की दासता से उन्हें मुक्त किया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

परमेश्वर की आज्ञा पालन का पुरस्कार

26 "अपने लिए मूर्तियाँ मत बनाओ। मूर्तियाँ या यादगार के पत्थर स्थापित मत करो। अपने देश में उपासना करने के लिए पत्थर की मूर्तियाँ स्थापित न करो। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

2^{मेरे} आराम के विशेष दिनों को याद रखो और मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!

3^{मेरे} नियमों और आदेशों को याद रखो और उनका पालन करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं जिस समय वर्षा आनी चाहिए, उसी समय वर्षा कराऊँगा। भूमि फ़सलें पैदा करेगी और पेड़ अपने फल देंगे। 5^{तुम्हारा} अनाज निकालने का काम तब तक चलेगा जब तक अँगूर इकट्ठा करने का समय आएगा और अँगूर का इकट्ठा करना तब तक चलेगा जब तक बोनो का समय आएगा। तब तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत होगा, और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे। 6^{मैं} तुम्हारे देश को शान्ति दूँगा। तुम शान्ति से सो सकोगे। कोई व्यक्ति भयभीत करने नहीं आएगा। मैं बिनाशकारी जानवरों को तुम्हारे देश से बाहर रखूँगा। और सेनाएं तुम्हारे देश से नहीं गुजरेगी।

7^{तुम} अपने शत्रुओं को पीछा करके भगाओगे और उन्हें हराओगे। तुम उन्हें अपनी तलवार से मार डालोगे। 8^{तुम्हारे} पाँच व्यक्ति सौ व्यक्तियों को पीछा कर के भगाएंगे और तुम्हारे सौ व्यक्ति हजार व्यक्तियों का पीछा करेंगे। तुम अपने शत्रुओं को हराओगे और उन्हें तलवार से मार डालोगे।

9^{तब} मैं तुम्हारी ओर मुड़ूँगा मैं तुम्हें बहुत से बच्चों वाला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा का पालन करूँगा। 10^{तुम्हारे} पास एक वर्ष से अधिक चलने वाली पर्याप्त पैदावार रहेगी। तुम नयी फसल

काटोगे। किन्तु तब तुम्हें पुरानी पैदावार नयी पैदावार के लिए जगह बनाने हेतु फेंकनी पड़ेगी। 11 तुम लोगों के बीच मैं अपना पवित्र तम्बू रखूँगा। मैं तुम लोगों से अलग नहीं होऊँगा। 12 मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। तुम मेरे लोग रहोगे। 13 मैं तुम्हारा परमेश्वर यहीवा हूँ। तुम मिश्र में दास थे। किन्तु मैं तुम्हें मिश्र से बाहर लाया। तुम लोग दास के रूप में भारी बोझ ढोने से झुके हुए थे किन्तु मैंने तुम्हारे कंधों के जुंफ को तोड़ फेंका। मैंने तुम्हें पुनः गर्व से चलने वाला बनाया।

यहोवा की आज्ञा पालन न करने के लिए दण्ड

14 किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे और मेरे ये सब आदेश नहीं मानोगे तो ये बुरी बातें होंगी। 15 यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को मानना अस्वीकार करते हो तो तुमने मेरी वाचा को तोड़ दिया है। 16 यदि तुम ऐसा करते हो तो मैं ऐसा करूँगा कि तुम्हारा भयंकर अनिष्ट होगा। मैं तुमको असाध्य रोग और तीव्र ज्वर लगाऊँगा। वे तुम्हारी आँखे नष्ट करेंगे और तुम्हारा जीवन ले लेंगे। जब तुम अपने बीज बोओगे तो तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी तुम्हारी पैदावार तुम्हारे शत्रु खाएंगे।

17 मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा, अतः तुम्हारे शत्रु तुमको हराएंगे। वे शत्रु तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हारे ऊपर शासन करेंगे। तुम तब भी भागोगे, जब तुम्हारा पीछा कोई न कर रहा होगा।

18 यदि इस के बाद भी तुम मेरी आज्ञा पालन नहीं करते हो तो मैं तुम्हारे पापों के लिए सात गुना अधिक दण्ड दूँगा। 19 मैं उन बड़े नगरों को भी नष्ट करूँगा जो तुम्हें गर्वीला बनाते हैं। आकाश वर्षा नहीं देगा और धरती पैदावार नहीं उत्पन्न करेगी। * 20 तुम कठोर परिश्रम करोगे, किन्तु इससे कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारी भूमि में कोई पैदावार नहीं होगी और तुम्हारे पेड़ों पर फल नहीं आएंगे।

21 यदि तब भी तुम मेरे विरुद्ध जाते हो और मेरी आज्ञा का पालन करना अस्वीकार करते हो तो मैं सात गुना कठोरता से मारूँगा। जितना अधिक पाप करोगे उतना अधिक दण्ड पाओगे। 22 मैं तुम्हारे विरुद्ध जंगली जानवरों को भेजूँगा। वे तुम्हारे बच्चों को तुमसे छीन ले जाएँगे। वे तुम्हारे मवेशियों को नष्ट करेंगे। वे तुम्हारी संख्या बहुत कम कर देंगे। लोग यात्रा करने से भय खाएंगे, सड़कें खाली हो जाएँगी।

23 यदि उन चीजों के होने पर भी तुम्हें सबक नहीं मिलता और तुम मेरे विरुद्ध जाते हो, 24 तो मैं तुम्हारे

विरुद्ध होऊँगा। मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना दण्ड दूँगा। 25 तुमने मेरी वाचा तोड़ी है, अतः मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ भेजूँगा। तुम सुरक्षा के लिए अपने नगरों में जाओगे। किन्तु मैं ऐसा करूँगा कि तुम लोगों में बीमारियाँ फैलें। तब तुम्हारे शत्रु तुम्हें हराएँगे। 26 मैं उस नगर में छोड़े गए अन्न का एक भाग तुम्हें दूँगा। किन्तु खाने के लिए बहुत कम अन्न रहेगा। दस स्त्रियाँ अपनी सभी रोटी एक चूल्हे में पका सकेंगी। वे रोटी के हर एक टुकड़े को नापेंगी। तुम खाओगे, किन्तु फिर भी भूखे रहोगे!

27 यदि तुम इतने पर भी मेरी बातें सुनना अस्वीकार करते हो, और मेरे विरुद्ध रहते हो 28 तो मैं वस्तुतः अपना क्रोध प्रकट करूँगा! मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए सात गुना दण्ड दूँगा। 29 तुम अपने पुत्र, पुत्रियों के शरीरों को खाओगे। 30 मैं तुम्हारे ऊँचे स्थानों को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारी सुगन्धित वेदियों को काट डालूँगा। मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी निर्जीव मूर्तियों के शवों पर डालूँगा। तुम मुझको अत्यन्त घिनौने लगोगे। 31 मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करूँगा। मैं ऊँचे पवित्र स्थानों को खाली कर दूँगा। मैं तुम्हारी भेंटों की मधुर सुगन्ध को नहीं लूँगा। 32 मैं तुम्हारे देश को इतना खाली कर दूँगा कि तुम्हारे शत्रु तक जो इसमें रहने आएँगे, वे इस पर चकित होंगे। 33 और मैं तुम्हें विभिन्न प्रदेशों में बिखेर दूँगा। मैं अपनी तलवार खींचूँगा और तुम्हें नष्ट करूँगा। तुम्हारी भूमि खाली हो जाएगी और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएँगे।

34 तुम अपने शत्रु के देशों में ले जाये जाओगे। तुम्हारी धरती खाली हो जायेगी और वह अंत में उस विश्राम को पायेगी। 35 जिससे तुमने उसे तब नहीं दिया था जब तुम उस पर रहते थे। 36 बचे हुए व्यक्ति अपने शत्रुओं के देश में अपना साहस खो देंगे। वह हर चीज़ से भयभीत होंगे। वह हवा में उड़ती पत्ती की तरह चारों ओर भागेंगे। वे ऐसे भागेंगे मानों कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो। 37 वे एक दूसरे पर तब भी गिरेंगे, जब कोई भी उनका पीछा नहीं कर रहा होगा।

“तुम इतने शक्तिशाली नहीं रहोगे कि अपने शत्रुओं के मुकाबले खड़े रह सको। 38 तुम अन्य लोगों में विलीन हो जाओगे। तुम अपने शत्रुओं के देश में लुप्त हो जाओगे। 39 इस प्रकार तुम्हारी सन्तानें तुम्हारे शत्रुओं के देश में अपने पापों में सड़ेंगी। वे अपने पापों में ठीक वैसे ही सड़ेंगी जैसे उनके पूर्वज सड़े।

आशा सदा रहती है

40 सम्भव है कि लोग अपने पाप स्वीकार करें और वे अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करेंगे। सम्भव है वे स्वीकार करें कि वे मेरे विरुद्ध हुए। सम्भव है वे यह स्वीकार करें कि उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है।

आकाश ... करेगी शाब्दिक “तुम्हारे लिए आकाश लोहा सा होगा और भूमि काँसे जैसी।”

41सम्भव है कि वे स्वीकार करें कि मैं उनके विरुद्ध हुआ और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में लाया। उन लोगों ने मेरे साथ अजनबी का सा व्यवहार किया। यदि वे विनम्र* हो जाएं और अपने पापों के लिए दण्ड स्वीकार करें 42तो मैं याकूब के साथ के अपनी वाचा को याद करूँगा। इसहाक के साथ के अपनी वाचा को याद करूँगा। इब्राहीम के साथ की गई वाचा को मैं याद करूँगा और मैं उस भूमि को याद करूँगा।

43"भूमि खाली रहेगी। भूमि आराम के समय का आनन्द लेगी। तब तुम्हारे बच्चे हुए लोग अपने पाप के लिए दण्ड स्वीकार करेंगे। वे सीखेंगे कि उन्हें इसलिए दण्ड मिला कि उन्होंने मेरे व्यवस्था से घृणा की और नियमों का पालन करना अस्वीकार किया। 44उन्होंने सचमुच पाप किया। किन्तु यदि वे मेरे पास सहायता के लिए आते हैं तो मैं उनसे दूर नहीं रहूँगा। मैं उनकी बातें तब भी सुनूँगा जब वे अपने शत्रुओं के देश में भी होंगे। मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। मैं उनके साथ अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा। क्यों? क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। 45मैं उनके पूर्वजों के साथ की गई वाचा को याद रखूँगा। मैं उनके पूर्वजों को इसलिए मित्र से बाहर लाया कि मैं उनका परमेश्वर हो सकूँ। दूसरे राष्ट्रों ने उन बातों को देखा। मैं यहोवा हूँ।"

46ये वे विधियाँ, नियम और व्यवस्थाएँ हैं जिन्हें यहोवा ने इब्राएल के लोगों को दिया। वे नियम इब्राएल के लोगों और यहोवा के बीच वाचा है। यहोवा ने उन नियमों को सैनै पर्वत पर दिया था। उसने मूसा को नियम दिए और मूसा ने उन्हें लोगों को दिया।

वचन महत्वपूर्ण हैं

27 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इब्राएल के लोगों से कहो : कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा को किसी व्यक्ति को अर्पित करने का वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा की सेवा विशेष ढंग से करेगा। याजक उस व्यक्ति के लिए विशेष मूल्य निश्चित करेगा। यदि लोग उसे यहोवा से वापस खरीदना चाहते हैं तो वे मूल्य देंगे। 3बीस से साठ वर्ष तक की आयु के पुरुष का मूल्य पचास शेकेल चाँदी होगी। (तुम्हें चाँदी को तोलने के लिए पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग करना चाहिए।) 4बीस से साठ वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य तीस शेकेल है। 5पाँच से बीस वर्ष की आयु के पुरुष का मूल्य बीस शेकेल है। पाँच से बीस वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य दस शेकेल है। 6एक महीने से पाँच महीने तक के बालक का मूल्य पाँच शेकेल है। एक बालिका

का मूल्य तीन शेकेल है। 7साठ या साठ से अधिक आयु के पुरुष का मूल्य पन्द्रह शेकेल है। एक स्त्री का मूल्य दस शेकेल है।

8"यदि व्यक्ति इतना गरीब है कि मूल्य देने में असमर्थ है तो उस व्यक्ति को याजक के सामने लाओ। याजक यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना मूल्य भुगतान में दे सकता है।

यहोवा को भेंट

9"कुछ जानवरों का उपयोग यहोवा की बलि के रूप में किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति उन जानवरों में से किसी को लाता है तो वह जानवर पवित्र हो जाएगा। 10वह व्यक्ति यहोवा को उस जानवर को देने का वचन देता है। इसलिए उस व्यक्ति को उस जानवर के स्थान पर दूसरा जानवर रखने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। उसे अच्छे जानवर को बुरे जानवर से नहीं बदलना चाहिए। उसे बुरे जानवर को अच्छे जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह व्यक्ति दोनों जानवरों को बदलना ही चाहता है तो दोनों जानवर पवित्र हो जाएंगे। दोनों जानवर यहोवा के हो जाएंगे।

11"कुछ जानवर यहोवा को बलि के रूप में नहीं भेंट किए जा सकते। यदि कोई व्यक्ति उन अशुद्ध जानवरों में से किसी को यहोवा के लिए लाता है तो वह जानवर याजक के सामने लाया जाना चाहिए। 12याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा। इससे कोई जानवर नहीं कहा जाएगा कि वह जानवर अच्छा है या बुरा, यदि याजक मूल्य निश्चित कर देता है तो जानवर का वही मूल्य है। 13यदि व्यक्ति जानवर को वापस खरीदना चाहता है* तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा और जोड़ना चाहिए।

यहोवा को भेंट किए गए मकान का मूल्य

14"यदि कोई व्यक्ति अपने मकान को पवित्र मकान के रूप में यहोवा को अर्पित करता है तो याजक को इसका मूल्य निश्चित करना चाहिए। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मकान अच्छा है या बुरा, यदि याजक मूल्य निश्चित करता है तो वही मकान का मूल्य है। 15किन्तु वह व्यक्ति जो मकान अर्पित करता है यदि उसे वापस खरीदना चाहता है तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा जोड़ना चाहिए। तब घर उस व्यक्ति का हो जाएगा।

वापस खरीदना चाहता है पहलौटा बच्चे या जानवर यहोवा को दिये जाते थे। किन्तु गधों की तरह बच्चों की बलि नहीं दी जाती थी। इस प्रकार व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को याजक को देता था। याजक मूल्य निश्चित करता था, और व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को धन या बलि चढ़ाने योग्य जानवर से वापस खरीद लेता था। देखें निर्गमन 13:1 - 16

उन लोगो ... विनम्र शाब्दिक "यदि वे अपने खतनारहित हृदय को विनम्र करें।"

भूमिस्मृति का मूल्य

16"यदि कोई व्यक्ति अपने खेत का कोई भाग यहोवा को अर्पित करता है तो उन खेतों का मूल्य उनको बोनो के लिए आवश्यक बीज पर आधारित होगा। एक होमेर जौ के बीज की कीमत चाँदी के पचास शेकेल होगी। 17यदि व्यक्ति जुबली के वर्ष खेत का दान करता है तब मूल्य वह होगा जो याजक निश्चित करेगा। 18किन्तु व्यक्ति यदि जुबली के बाद खेत का दान करता है तो याजक को वास्तविक मूल्य निश्चित करना चाहिए। उसे अगले जुबली वर्ष तक के वर्षों को गिनना चाहिए। तब वह उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित करने के लिए करेगा। 19यदि खेत दान देने वाला व्यक्ति खेत को वापस खरीदना चाहे तो उसके मूल्य में पाँचवाँ भाग और जोड़ा जाएगा। 20यदि वह व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो खेत सदैव याजकों का होगा। यदि खेत किसी अन्य को बेचा जाता है तो पहला व्यक्ति उसे वापस नहीं खरीद सकता।

21"यदि व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो जुबली के वर्ष खेत केवल यहोवा के लिए पवित्र रहेगा। यह सदैव याजकों का रहेगा। यह उस भूमि की तरह होगा जो पूरी तरह यहोवा को दे दी गई हो।

22"यदि कोई अपने खरीदे खेत को यहोवा को अर्पित करता है जो उसकी निजी सम्पत्ति* का भाग नहीं है। 23तब याजक को जुबली के वर्ष तक वर्षों को गिनना चाहिए और खेत का मूल्य निश्चित करना चाहिए। तब वह खेत यहोवा का होगा। 24जुबली के वर्ष वह खेत मूल भूस्वामी के पास चला जाएगा। वह उस परिवार को जाएगा जो उसका स्वामी है।

25"तुम्हें पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग उन मूल्यों को अदा करने के लिए करना चाहिए। पवित्र स्थान के प्रामाणिक शेकेल का तोल बीस गेरा* है।

जानवरों का मूल्य

26"लोग मवेशियों और भेड़ों को यहोवा को दान दे सकते हैं, किन्तु यदि जानवर पहलौठा है तो वह जानवर

जन्म से ही यहोवा का है। इसलिए लोग पहलौठा जानवर का दान नहीं कर सकते। 27लोगों को पहलौठा जानवर यहोवा को देना चाहिए। किन्तु यदि पहलौठा जानवर अशुद्ध है तो व्यक्ति को उस जानवर को वापस खरीदना चाहिए। याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा और व्यक्ति को उस मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए। यदि व्यक्ति जानवर को वापस नहीं खरीदता तो याजक को अपने निश्चित किए गए मूल्य पर उसे वेच देना चाहिए।

विशेष भेंट

28"एक विशेष प्रकार की भेंट है जिसे लोग यहोवा को चढ़ते हैं। वह भेंट पूरी तरह यहोवा की है। वह भेंट न तो वापस खरीदी जा सकती है न ही बेची जा सकती है। वह भेंट यहोवा की है। उस प्रकार की भेंटें ऐसे लोग, जानवर और खेत हैं, जो परिवार की सम्पत्ति हैं। 29यदि वह विशेष प्रकार की यहोवा को भेंट कोई व्यक्ति है तो उसे वापस खरीदा नहीं जा सकता। उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिए।

30"सभी पैदावारों का दसवाँ भाग यहोवा का है। इसमें खेतों, फसलें और पेड़ों के फल सम्मिलित हैं। वह दसवाँ भाग यहोवा का है। 31इसलिए यदि कोई व्यक्ति अपना दसवाँ भाग वापस लेना चाहता है तो उसके मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए और वापस खरीदना चाहिए।

32"याजक व्यक्तियों के मवेशियों और भेड़ों में से हर दसवाँ जानवर लेगा। हर दसवाँ जानवर यहोवा का होगा। 33मालिक को यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि वह जानवर अच्छा है या बुरा। उसे जानवर को अन्य जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह बदलने का निश्चय करता है तो दोनों जानवर यहोवा के होंगे। वह जानवर वापस नहीं खरीदा जा सकता।"

34ये वे आदेश हैं जिन्हें यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा को दिये। ये आदेश इब्राएल के लोगों के लिए हैं।

निजी सम्पत्ति अर्थात् वह भूमि जो उसके परिवार या उसके परिवार समूह को दी गई हो।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)

© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.



Bible League International

1 Bible League Plaza

Crete, IL 60417, USA

Phone: 866-825-4636

Email: permissions@bibleleague.org

Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0

B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2

B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6

B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads

